हिन्दी पाक्षिक

सेमन्या कणवघाटी

RNI No.: UTTHIN/2013/54659

वर्ष-13 अंक-16 हरिद्वार, बुधवार, 01 जुलाई, 2026 मूल्य-दो रूपया मात्र पृष्ठ-8

उत्तराखण्ड की सड़क अवसंरचना को रूपये 7 हजार करोड़ की मिली सहमति

देहरादून,संवाददाता। मुख्यमंत्री धामी ने नई दिल्ली में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया। बैठक में उत्तराखण्ड राज्य से संबंधित सड़क एवं अवसंरचना विकास से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। मुख्यमंत्री ने राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों, सीमांत क्षेत्रों की सामरिक एवं रणनीतिक महत्ता, तीर्थाटन, पर्यटन तथा आपदा प्रबंधन की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए राज्य में सुदृढ़ एवं आधुनिक सड़क नेटवर्क के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने राज्य के लंबित प्रस्तावों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय का अनुरोध किया।

केंद्रीय सड़क अवसंरचना निधि (CRIF) के अंतर्गत वर्ष 2026-27 हेतु राज्य सरकार को लगभग रूपये 750 करोड़ लागत की परियोजनाओं की स्वीकृति पर सहमति प्रदान की गई। इसके साथ ही NHO के अंतर्गत 05 प्रमुख परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई, जिनकी कुल अनुमानित लागत लगभग रूपये 2966 करोड़ है। इनमें श्रीनगर बाईपास का PMC, पुरकाजी-लक्सर-हरिद्वार मार्ग की चार-लेनिंग, लोहाघाट एवं पिथौरागढ़ बाईपास की alignment, मझोला से खटीमा के आबादी भाग में चार-लेन विस्तार तथा रामनगर-रानीखेत (मोहन) मार्ग का सुदृढ़ीकरण प्रमुख रूप से शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने वर्ष 2025-26 तक की रूपये 530.11 करोड़ की लंबित प्रतिपूर्ति राशि शीघ्र अवमुक्त किए जाने तथा का भी अनुरोध किया। मुख्यमंत्री ने आगामी अर्धकुंभ मेला 2027 के दृष्टिगत हरिद्वार बाईपास परियोजना को समयबद्ध रूप से पूर्ण किए जाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि इससे यातायात दबाव में कमी आएगी तथा श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को सुगम आवागमन की सुविधा प्राप्त होगी। मुख्यमंत्री ने कोटद्वार बाईपास परियोजना के कार्यों में भी तेजी लाने का अनुरोध किया, जिससे क्षेत्रीय यातायात व्यवस्था सुगम हो सके तथा स्थानीय जनता को जाम की समस्या से राहत मिले।दोनों ही प्रस्तावों को सहमति प्रदान की गई।

मुख्यमंत्री ने National Highways पर Spur के माध्यम से अन्य मार्गों के संयोजन हेतु कुछ परियोजनाओं के लिए लगभग रूपये 3000 करोड़ की सैद्धांतिक सहमति प्रदान किए जाने का अनुरोध किया, जिस पर केंद्रीय मंत्री द्वारा सकारात्मक सहमति व्यक्त की गई। इसके अतिरिक्त अल्मोड़ा सिकुड़ा बैंड से एनएच-309 तक टनल सहित मोटर मार्ग निर्माण हेतु लगभग रूपये 300 करोड़ की परियोजना पर चर्चा और सैद्धान्तिक सहमति की गई।राज्य में आपदा प्रबन्धन में सफल और कुशल कार्यों के दृष्टिगत मुख्यमंत्री ने उत्तराखण्ड लैंडस्लाइड मिटिगेशन मैनेजमेंट सेंटर (ULMMC) के माध्यम से भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों में उपचारात्मक कार्यों हेतु डीपीआर तैयार किए जाने हेतु स्थ करने का अनुरोध किया जिससे संवेदनशील क्षेत्रों में स्थायी एवं वैज्ञानिक समाधान सुनिश्चित हो सके। मंत्रालय द्वारा इसे स्वीकृत किया गया है। मुख्यमंत्री ने सीमा सड़क संगठन (BRO) से संबंधित लंबित मामलों, विशेषकर ऋषिकेश-गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग के हिना-तेखला-नेताला-गरमपानी खंड की डीपीआर तथा जोशीमठ बाईपास मार्ग के संशोधित प्रस्तावों (COS) को शीघ्र स्वीकृति प्रदान किए जाने का अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अत्यंत कम दरों पर प्राप्त निविदाओं के मामलों में अतिरिक्त परफॉर्मेंस सिक्योरिटी की वर्तमान व्यवस्था में आवश्यक संशोधन किया जाए, जिससे पर्वतीय क्षेत्रों में सड़क निर्माण एवं स्लोप ट्रीटमेंट कार्य समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से संपन्न हो सकें।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन एवं केंद्र सरकार के सहयोग से इन सभी परियोजनाओं के शीघ्र क्रियान्वयन से उत्तराखण्ड में सड़क संपर्क एवं आधारभूत संरचना को नई मजबूती मिलेगी। इससे सीमांत क्षेत्रों का विकास, पर्यटन को बढ़ावा, आपदा प्रबंधन क्षमता में वृद्धि तथा राज्य की आर्थिक प्रगति को गति प्राप्त होगी।

बैठक में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री अजय टम्टा, सचिव लोक निर्माण विभाग डॉ. पंकज कुमार पांडेय, सचिव सड़क परिवहन बृजेश कुमार संत, स्थानिक आयुक्त अजय मिश्रा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

संतों का जीवन परमार्थ के लिए समर्पित होता है : जगतगुरु स्वामी विष्णु प्रपन्नाचार्य

हरिद्वार । भूपतवाला स्थित आचार्य बेला इंडिया टेंपल में श्री साकेत बिहारी भगवान के त्रिदिवसीय ब्रह्मोत्सव कार्यक्रम के संपन्न होने पर संत सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य बेला इंडिया टेंपल के अध्यक्ष जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्यामनारायणाचार्य महाराज एवं संचालन युवराज दामोदराचार्य दिव्यांश वेदांती महाराज ने किया। नागोरिया पीठाधीश्वर जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी विष्णु प्रपन्नाचार्य महाराज ने कहा कि संतों का जीवन परमार्थ के लिए समर्पित होता है। संत अपने भक्तों को ज्ञान की प्रेरणा देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्यामनारायणाचार्य महाराज वयोवृद्ध अवस्था में भी अपने तप और विद्वत्ता के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं, यह संत समाज के लिए गौरव की बात है। स्वामी हरिहरानंद एवं स्वामी रविदेव शास्त्री महाराज ने कहा कि संतों का जीवन निर्मल जल के समान होता है। राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधकर सनातन संस्कृति को जीवंत रखने में संत समाज का अहम योगदान रहा है। कहा कि आचार्य बेला इंडिया टेंपल सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार करने में अहम भूमिका निभा रहा है। जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्यामनारायणाचार्य महाराज ने कहा कि भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म युगो युगो से समाज को सद्भावना का संदेश प्रदान कर रहे हैं। युवराज दामोदराचार्य दिव्यांश वेदांती महाराज ने कार्यक्रम में पधारे सभी संत महापुरुषों का फूल माला पहनकर स्वागत किया और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम मे महंत सूरज दास, श्रीमहंत विष्णु दास, महंत प्रहलाद दास, महंत रामेंद्र बिहारी दास, स्वामी दिनेश दास, महंत सुतीक्ष्ण मुनि, महंत बलराम मुनी, स्वामी ज्योतिर्मयानंद, महंत कामेश्वर पुरी, जगद्गुरु रामानुजाचार्य नागोरिया पीठाधीश्वर स्वामी विष्णु प्रपन्नाचार्य महाराज इंदौर, स्वामी रामचंद्राचार्य महाराज पुष्कर, स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज गुजरात, स्वामी देवराजाचार्य महाराज नेपाल, स्वामी अच्युत प्रपन्नाचार्य महाराज नेपाल, स्वामी पुण्डरीकाक्षाचार्य महाराज वृंदावन, स्वामी मदन मोहनचार्य अयोध्या सहित बड़ी संख्या में संत महापुरुष उपस्थित रहे।

विशेष पुनरीक्षण अभियान में लापरवाही बर्दाश्त नहीं, एईआरओ पूरी जिम्मेदारी से करें कामः डीएम

हरिद्वार,संवाददाता । भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम को समयबद्ध और त्रुटिरहित ढंग से पूरा कराने के लिए जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मयूर दीक्षित ने सोमवार को कलक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक की। जिसमें सभी विधानसभा क्षेत्रों के सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (एईआरओ) के साथ बैठक की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पुनरीक्षण कार्य में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए और प्रत्येक चरण की नियमित निगरानी सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) के माध्यम से घर-घर जाकर गणना प्रपत्रों का वितरण, संकलन और डिजिटलीकरण का कार्य पूरी गंभीरता और तत्परता से कराया जाए। सभी एईआरओ अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों में चल रहे कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा स्वयं भी क्षेत्र का निरीक्षण कर कार्यों की गुणवत्ता का सत्यापन करें। उन्होंने निर्देश दिए कि विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी अपात्र व्यक्ति मतदाता सूची में शामिल न हो और कोई भी पात्र मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने से वंचित न रहे। इसके लिए प्रत्येक आवेदन और अभिलेख का गहन परीक्षण एवं सत्यापन किया जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) जितेंद्र कुमार, अपर जिलाधिकारी वैभव गुप्ता, परियोजना निदेशक नलिनीत घिल्डियाल, जिला शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) अमित कुमार चंद, उप नगर आयुक्त दीपक गोस्वामी, सहायक निदेशक मत्स्य विभाग गरिमा मिश्रा, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका शिवालिक नगर तारिक खान सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

सम्पादकीय

तकनीकी कौशल की जरूरत

टीसीएस में मानव कर्मचारियों की संख्या आधी रह जाएगी। जो वहां होगा, वही रुझान अन्य आईटी कंपनियों में भी देखने को मिल सकता है। भारत की आईटी इंडस्ट्री में फिलहाल 60 लाख से ज्यादा कर्मचारी हैं। टाटा कंसल्टैंसी सर्विसेज (टीसीएस) के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन दो टूक यह कह कर खतरे की घंटी बजा दी है कि उनकी कंपनी में अब जितने मानव कर्मचारी होंगे, उतनी ही संख्या आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) एजेंट लगाए जाएंगे। इसका सीधा मतलब यह है कि मानव कर्मचारियों की संख्या अगले कुछ वर्षों में आधी रह जाएगी। जो टीसीएस में होगा, जाहिर है, वही रुझान अन्य आईटी कंपनियों में भी देखने को मिलेगा। भारत की आईटी इंडस्ट्री में फिलहाल 60 लाख से ज्यादा कर्मचारी हैं। इस क्षेत्र में तनख्वाह अपेक्षाकृत ज्यादातर अन्य क्षेत्रों से अधिक रही है। इस रूप में ये उद्योग भारत में उपभोक्ता मध्य वर्ग का सबसे बड़ा सहारा है। आय कर दाताओं में सबसे बड़ा हिस्सा आईटी कर्मियों का ही है। अब अगर रोजगार के लिहाज से देखें, तो एआई इस क्षेत्र के लिए तलवार बन कर आई है। नए डिग्रीधारियों के लिए अवसर यहां पहले से सिकुड़ रहे हैं। पिछले साल कर्मचारियों की छंटनी भी जोर पकड़ गई। खुद टीसीएस से 12 हजार कर्मी निकाले गए। अब चंद्रशेखरन ने साफ किया है कि यह सब नीतिगत निर्णय के तहत हो रहा है। मतलब यह कि साल 2000 के आसपास इंजीनियरिंग कॉलेज की डिग्री लेकर बेहतर करियर बना लेने का जो भरोसा भारत में बना, अब उसकी नींव हिलने लगी है। नौकरियों की संभावना नहीं होगी, तो इंजीनियरिंग कॉलेजों के फैले जाल पर भी बुरा असर पड़ेगा। आशंका पहले से जताई जा रही है कि इन सबका असर मध्य वर्ग के सिकुड़ने के रूप में सामने आएगा। यानी आईटी इंडस्ट्री में जो होने जा रहा है, उसके परिणाम दूरगामी हैं। बेशक, एआई से नए कौशल वाली कुछ नौकरियां पैदा होंगी। लेकिन ट्रेंड यह है कि एआई एजेंट दोहराव वाले हर ऐसे कार्य के लिए प्रशिक्षित होते जा रहे हैं, जिनमें तकनीकी कौशल की जरूरत पड़ती है। स्पष्टत: जितनी नौकरियां जाएंगी, उसकी तुलना में बहुत कम नए रोजगार पैदा होंगे। और यह तो सिर्फ आईटी इंडस्ट्री की बात है। एआई का उपयोग ऐसे अनेक क्षेत्रों में बढ़ रहा है, जहां ह्वाइट कॉलर रोजगार के अवसर बनते रहे हैं। वहां भी तलवार गिरने वाली है।

आमूल परिवर्तन की जरूरत

वित्त मंत्रालय के मुताबिक तीन कारणों से दुनिया नया आकार ले रही है: महाशक्तियों में प्रतिस्पर्धा, पश्चिमी गठबंधन में दरार, और मैनुफैक्चरिंग में चीन का वर्चस्व। इसके अनुरूप ढलने के लिए भारत के पास बहुत कम वक्त है। बढ़ती आर्थिक चुनौतियों के बीच वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में आए बदलावों से तालमेल बनाने के लिए भारत के पास एक बहुत छोटी खिड़की मौजूद है। यह बात केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने स्थायी संसदीय समिति के सामने कही। बताया गया कि चीन ने अपने नए कानून के तहत वहां स्थित आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर दिया है। वहां से अपने कारखाने हटाने वाली कंपनियों को वह दंडित कर रहा है। इससे भारत में मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए अपनाई गई नीति के सामने मुश्किलें खड़ी हुई हैं। वित्त मंत्रालय ने कहा कि इस समय ये तीन परिघटनाएं दुनिया को नया आकार दे रही है: बड़ी ताकतों में प्रतिस्पर्धा, पश्चिमी गठबंधन में दरार, और मैनुफैक्चरिंग में चीन का प्रभुत्व। मंत्रालय ने कहा कि इन परिवर्तनों पर भारत को अधिक फुर्तीला और रणनीतिक प्रतिक्रिया दिखानी होगी। ऐसा करने के लिए देश के पास 'बहुत छोटा अवसर' है। मंत्रालय ने कहा कि महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के तहत व्यापार, तकनीक, और वित्त का उपयोग सामान्य लाभ उठाने के बजाय रणनीतिक हितों के मुताबिक किया जा रहा है। इसी क्रम में चीन ने अपने यहां से कारखाना, तकनीक, या विशेषज्ञों को दूसरे देशों में- खासकर भारत ले जाने की राह में कानूनी रुकावट खड़ी कर दी है। भारत में साझा उद्यम या देशी निवेश के तहत लगाए जा रहे कारखानों की इन मामलों में चीन पर निर्भरता रही है। स्पष्टत: ये दोनों परिघटनाएं भारत के लिए चुनौती बनकर आई हैं। हालांकि यूरोप और अमेरिका के बीच पड़ती दरार को वित्त मंत्रालय ने भारत के लिए अवसर के रूप में देखा है, मगर इसका लाभ उठाने के लिए तुरंत खुद को तैयार करने की चुनौती उसके सामने है। मंत्रालय ने माना कि इसके लिए ज्यादा वक्त नहीं है। कहा जा सकता है कि वित्त मंत्रालय को बदल रही दुनिया का सही अहसास है।

अग्नि-जाल में बदलते शहरी भवन

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत आज विश्व के सबसे तेज़ी से शहरीकरण करने वाले देशों में शामिल है। आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, सेवा क्षेत्र के विस्तार और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर निरंतर हो रहे पलायन ने भारतीय शहरों का स्वरूप तेजी से बदला है। महानगरों से लेकर छोटे शहरों तक बहुमंजिला इमारतें, व्यावसायिक कॉम्प्लेक्स, कोचिंग संस्थान, होटल, अस्पताल और मिश्रित-उपयोग (Mi&ed-Use) वाले भवन विकास के नए प्रतीक बनकर उभरे हैं। किंतु इस विकास के पीछे एक गंभीर सच्चाई भी छिपी है—शहरी नियोजन की अनदेखी, सुरक्षा मानकों की उपेक्षा और प्रशासनिक शिथिलता। परिणामस्वरूप, आज अनेक शहरी भवन आर्थिक प्रगति के केंद्र होने के साथ-साथ संभावित 'अग्नि-जाल' भी बनते जा रहे हैं। हाल के वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों में हुई अग्नि-दुर्घटनाओं ने इस संकट की भयावहता को उजागर किया है। दिल्ली के कोचिंग संस्थानों, सूरत के कोचिंग सेंटर, कोलकाता के होटल, हैदराबाद की व्यावसायिक इमारतों, मुंबई के अस्पतालों और अनेक बाजारों में लगी आग ने सैकड़ों परिवारों को असमय शोक में डुबो दिया। अधिकांश घटनाओं में एक जैसी कमियाँ सामने आईं—भवनों का अनधिकृत उपयोग, अग्नि-सुरक्षा उपकरणों का अभाव, बंद या अवरुद्ध आपातकालीन निकास, संकरी सड़कें, अवैध पार्किंग और नियमों के पालन में गंभीर लापरवाही। यह स्पष्ट संकेत है कि समस्या किसी एक भवन, किसी एक शहर या किसी एक विभाग की नहीं, बल्कि हमारे पूरे शहरी विकास मॉडल की है।

भारत में मिश्रित-उपयोग वाले भवनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। एक ही भवन में नीचे दुकानें, ऊपर कार्यालय, उसके ऊपर कोचिंग संस्थान और सबसे ऊपर आवास होना अब सामान्य बात है। यह व्यवस्था आर्थिक दृष्टि से लाभकारी अवश्य प्रतीत होती है, लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत जोखिमपूर्ण है। ऐसे भवनों में ज्वलनशील सामग्री, विद्युत उपकरण, गैस सिलेंडर, बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति और सीमित निकास मार्ग आग लगने की स्थिति में उसे विनाशकारी बना देते हैं। यदि भवन मूल रूप से आवासीय उद्देश्य के लिए निर्मित हो और बाद में बिना संरचनात्मक परिवर्तन के व्यावसायिक गतिविधियों के लिए उपयोग में लाया जाए, तो खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

अनियोजित शहरीकरण इस समस्या की सबसे बड़ी जड़ है। भारत के अधिकांश शहर बिना दीर्घकालिक मास्टर प्लान के फैलते गए। आबादी बढ़ती गई, लेकिन सड़कें नहीं बढ़ीं; भवन ऊँचे होते गए, परंतु अग्निशमन सेवाओं की क्षमता उसी अनुपात में विकसित नहीं हुई। अनेक पुराने बाजारों और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में अग्निशमन वाहन तक प्रवेश नहीं कर पाते। कई स्थानों पर बिजली के तारों का जाल, अवैध पार्किंग और अतिक्रमण आग पर नियंत्रण की प्रक्रिया को और कठिन बना देते हैं। ऐसी परिस्थितियों में कुछ ही मिनटों में छोटी आग भी बड़ी त्रासदी में बदल जाती है। इस संकट का दूसरा महत्वपूर्ण कारण नीतिगत विरोधाभास है। एक ओर सरकार 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के माध्यम से व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अनुमतियों की प्रक्रिया सरल बना रही है, वहीं दूसरी ओर सुरक्षा मानकों के अनुपालन पर पर्याप्त बल नहीं दिया जा रहा। कई राज्यों में निश्चित ऊँचाई तक के भवनों को अनिवार्य अग्नि-अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Fire NOC) से छूट प्राप्त है। परिणामस्वरूप हजारों ऐसे भवन बिना नियमित अग्नि-सुरक्षा निरीक्षण के संचालित होते रहते हैं। कई बार भवन निर्माण की अनुमति एक उद्देश्य के लिए मिलती है, किंतु समय के साथ उसका उपयोग पूरी तरह बदल जाता है। दुर्भाग्य से इस परिवर्तन की प्रभावी निगरानी करने वाली कोई मजबूत प्रणाली विकसित नहीं हो सकी है। प्रशासनिक समन्वय का अभाव भी स्थिति को जटिल बनाता है। भवन निर्माण की अनुमति नगर निगम देता है, भूमि उपयोग परिवर्तन विकास प्राधिकरण देखता है, व्यापार लाइसेंस किसी अन्य विभाग से जारी होता है और अग्नि-सुरक्षा का दायित्व अग्निशमन विभाग पर होता है। इन विभागों के बीच सूचनाओं का समुचित आदान-प्रदान नहीं होने से नियमों का प्रभावी अनुपालन नहीं हो पाता। कई बार भवन निर्माण के समय सभी औपचारिकताएँ पूरी कर ली जाती हैं, लेकिन बाद में भवन में किए गए अवैध परिवर्तन वर्षों तक किसी की निगाह में नहीं आते।

भ्रष्टाचार और जवाबदेही का अभाव भी इस समस्या का महत्वपूर्ण पहलू है। यदि निरीक्षण केवल कागजों तक सीमित रह जाएँ और प्रमाण-पत्र वास्तविक जाँच के बिना जारी होने लगें, तो नियमों का अस्तित्व मात्र औपचारिकता बनकर रह जाता है। अनेक दुर्घटनाओं के बाद यह सामने आया कि भवनों में अग्निशामक यंत्र तो लगे थे, किंतु उनकी समय-समय पर जाँच नहीं हुई थी। कई स्थानों पर स्प्रिंकलर प्रणाली कार्य नहीं कर रही थी या आपातकालीन निकास पर ताले लगे हुए थे। यह केवल तकनीकी विफलता नहीं, बल्कि प्रशासनिक और नैतिक विफलता भी है। नागरिक जागरूकता की कमी भी इस संकट को बढ़ाती है। अधिकांश लोग भवन खरीदते या किराए पर लेते समय अग्नि-सुरक्षा व्यवस्था की जाँच नहीं करते। व्यापारिक प्रतिष्ठान लागत कम करने के लिए सुरक्षा उपकरणों की उपेक्षा करते हैं। नियमित मॉक ड्रिल, आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण और आपातकालीन निकासी अभ्यास को अनावश्यक समझा जाता है। जबकि विकसित देशों में अग्नि-सुरक्षा संस्कृति (Fire Safety Culture) को विद्यालय स्तर से ही बढ़ावा दिया जाता है।

भारत में आपदा प्रबंधन की व्यवस्था पिछले दो दशकों में काफी मजबूत हुई है, लेकिन आग जैसी शहरी आपदाओं की रोकथाम पर अपेक्षित ध्यान अभी भी नहीं दिया गया है। आपदा आने के बाद राहत और बचाव कार्यों में हमारी संस्थाएँ उल्लेखनीय कार्य करती हैं, किंतु यदि रोकथाम और जोखिम न्यूनीकरण पर समान गंभीरता से निवेश किया जाए तो अनेक त्रासदियों को रोका जा सकता है। आपदा प्रबंधन का मूल सिद्धांत भी यही है कि रोकथाम पर खर्च किया गया प्रत्येक रुपया राहत और पुनर्वास पर होने वाले कई गुना व्यय को बचाता है। अब आवश्यकता केवल दंडात्मक कार्रवाई की नहीं, बल्कि व्यापक संरचनात्मक सुधारों की है। सबसे पहले शहरी नियोजन को वैज्ञानिक और भविष्य-दृष्टि वाला बनाया जाना चाहिए। प्रत्येक शहर में भूमि उपयोग, जनसंख्या घनत्व, सड़क चौड़ाई, जल स्रोत, अग्निशमन केंद्रों की स्थिति और आपातकालीन पहुँच मार्गों का पुनर्मूल्यांकन किया जाए। मिश्रित-उपयोग वाले क्षेत्रों के लिए अलग सुरक्षा मानक निर्धारित किए जाएँ और भवनों की स्वीकृति इन्हीं मानकों के अनुरूप हो। दूसरा, राष्ट्रीय भवन संहिता तथा अग्नि-सुरक्षा मानकों का देशभर में समान रूप से कठोर अनुपालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। भवन की ऊँचाई के बजाय उसमें उपस्थित लोगों की संख्या, गतिविधि की प्रकृति और अग्नि-जोखिम के आधार पर सुरक्षा मानक निर्धारित किए जाने चाहिए। सभी सार्वजनिक और मिश्रित-उपयोग भवनों में स्वचालित स्प्रिंकलर, धुआँ संवेदक, अग्नि-अलार्म, आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था और स्पष्ट निकास मार्ग अनिवार्य हों। तीसरा, भवनों की स्वीकृति, व्यापार लाइसेंस, Fire NOC और निरीक्षण को एकीकृत डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से जोड़ा जाए। यदि किसी भवन का उपयोग स्वीकृत उद्देश्य से भिन्न पाया जाए या उसका सुरक्षा प्रमाण-पत्र समाप्त हो जाए तो संबंधित विभागों को स्वत: सूचना प्राप्त हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भू-स्थानिक तकनीक का उपयोग कर जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है। चौथा, अग्निशमन सेवाओं का आधुनिकीकरण अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक उपकरण, ऊँची इमारतों तक पहुँचने वाली हाइड्रोलिक सीढ़ियाँ, पर्याप्त जल स्रोत, प्रशिक्षित मानव संसाधन और तेज़ प्रतिक्रिया प्रणाली विकसित की जाए। छोटे और मध्यम शहरों में भी अग्निशमन अवसंरचना को जनसंख्या और भवनों की संख्या के अनुरूप मजबूत किया जाना चाहिए। पाँचवाँ, नागरिक सहभागिता को नीति का अभिन्न अंग बनाया जाए। विद्यालयों, महाविद्यालयों, कोचिंग संस्थानों, बाजारों, अस्पतालों और आवासीय सोसाइटियों में नियमित अग्नि-सुरक्षा प्रशिक्षण और मॉक ड्रिल अनिवार्य किए जाएँ। जिस प्रकार स्वच्छ भारत अभियान ने जनभागीदारी को बढ़ावा दिया, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर अग्नि-सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए। अंतत:, शासन व्यवस्था में जवाबदेही सुनिश्चित करना सबसे महत्वपूर्ण है। यदि किसी दुर्घटना का कारण नियमों का उल्लंघन या निरीक्षण में लापरवाही हो, तो केवल भवन मालिक ही नहीं बल्कि संबंधित अधिकारियों की भी स्पष्ट जवाबदेही तय हो। पारदर्शिता, नियमित सामाजिक लेखा-परीक्षण और स्वतंत्र सुरक्षा ऑडिट इस दिशा में प्रभावी कदम हो सकते हैं। भारत के शहर केवल आर्थिक गतिविधियों के केंद्र नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, सपनों और भविष्य के आधार हैं। यदि शहरी विकास सुरक्षा, नियोजन और उत्तरदायित्व से रहित होगा, तो विकास का यही मॉडल बार-बार मानवीय त्रासदियों को जन्म देता रहेगा। आवश्यकता ऐसी शहरी संस्कृति विकसित करने की है जिसमें भवनों की ऊँचाई से अधिक महत्व उनकी सुरक्षा को मिले, व्यावसायिक लाभ से अधिक प्राथमिकता मानव जीवन को दी जाए और नियमों का पालन बाध्यता नहीं बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व माना जाए।

मौसम का मिजाज बदलने से राहत, 10 डिग्री तापमान लुढ़का

हरिद्वार। धर्मनगरी में सोमवार को दिन में मौसम का मिजाज बदल गया। इस दौरान आसमान में बादल छाने से धूप की तपिश कम रही। साथ ही हल्की बूंदाबांदी होने से हवा में ठंडक बन गई। हालांकि कुछ देर बाद धूप निकल गई। लेकिन दोबारा बादल छाने के बाद शाम तक धूप नहीं निकली। वहीं मौसम बदलने के बाद अधिकतम तापमान में 10 डिग्री सेल्सियस की गिरावट रिकॉर्ड हुई। सोमवार को आईआईटी कृषि मौसम वेधशाला के अनुसार धर्मनगरी में अधिकतम तापमान 30 डिग्री और न्यूनतम तापमान 25 डीग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। रविवार को अधिकतम तापमान 40 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28.5 डिग्री सेल्सियस रहा था। इस दौरान न्यूनतम तापमान 3.5 डिग्री सेल्सियस लुढ़क गया। पिछले एक सप्ताह से शहर में लोग भीषण गर्मी से परेशान थे। दिन में गर्म हवाओं और तेज धूप के बीच लोगों को आवाजाही में दिक्कतें उठानी पड़ रही थी। सोमवार को सुबह के समय भी लोग तपती धूप और गर्मी से परेशान रहे। लेकिन दोपहर के समय बादल छाने से लोगों को गर्मी से राहत मिली। इसके बाद शाम तक हवाएं चलने से गर्मी का अहसास कम हो गया। रात के समय भी तापमान गिरने से गर्मी का प्रकोप कम रहा। उधर मौसम विभाग के अनुसार आगामी 30 जुलाई तक धर्मनगरी में बादल छाए रहने की संभावना है। हालांकि इस दौरान मौसम विभाग ने बारिश का कोई अनुमान जारी नहीं किया है। मौसम विभाग का आगामी दिनों में तापमान बढ़ने का पूर्वानुमान है।

कांगड़ी फ्लाईओवर पर भीषण हादसा, मां-बेटे समेत तीन की मौत

हरिद्वार। कांगड़ी फ्लाईओवर पर सोमवार तड़के हुए भीषण सड़क हादसे में मां-बेटे समेत तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। टनकपुर डिपो की रोडवेज बस और पिकअप वाहन की आमने-सामने की टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि पिकअप के परखच्चे उड़ गए और दो लोग फ्लाईओवर से नीचे जा गिरे। एक सप्ताह के भीतर इसी फ्लाईओवर पर यह दूसरा बड़ा हादसा है। पुलिस के अनुसार सोमवार सुबह करीब 4:15 बजे कांगड़ी फ्लाईओवर पर टनकपुर डिपो की रोडवेज बस, जो नजीबाबाद से हरिद्वार की ओर आ रही थी, की हरिद्वार से बिजनौर जा रहे पिकअप वाहन से जोरदार भिड़ंत हो गई। पिकअप में करीब 10 लोग सवार थे, जबकि रोडवेज बस में लगभग 44 यात्री मौजूद थे। सूचना मिलते ही श्यामपुर पुलिस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को 108 एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल पहुंचाया। उपचार के दौरान अहान (18 वर्ष) पुत्र शराफत निवासी बढ़ापुर, कोतवाली नजीबाबाद, जिला बिजनौरतथा करीब 35 वर्षीय एक अज्ञात व्यक्ति की मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल शराफत (42 वर्ष) पुत्र शरमत निवासी बढ़ापुर, कोतवाली नजीबाबाद, जिला बिजनौर और उनकी पत्नी शबाना (35 वर्ष) को एम्स ऋषिकेश रेफर किया गया, लेकिन रास्ते में शबाना ने भी दम तोड़ दिया।घायलों में अन्नू (18वर्ष) पुत्र मेहन्दी हसन, सोनी लाल (25वर्ष) पुत्र राम रहीश निवासी हरदोई, उत्तर प्रदेश तथा शमीम (42) पुत्र हसीनूद्दीन निवासी बिजनौर, उत्तर प्रदेश शामिल हैं। पिकअप में सवार अधिकांश लोग बढ़ापुर के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर परिजनों को सूचना दे दी है। कोतवाली की कार्यवाहक प्रभारी सीओ अवनी तिवारी ने बताया कि मृतकों के पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिए गए है।

गैस प्लांट चौकी क्षेत्र में विद्युत तार टूटने से यातायात प्रभावित हुआ

हरिद्वार। रानीपुर क्षेत्र में बैरियर नंबर छह स्थित गैस प्लांट चौकी के पास सोमवार सुबह बिजली का तार टूटकर सड़क पर गिर गया। इससे अफरातफरी मच गई और करीब दो घंटे तक यातायात प्रभावित रहा। पुलिस ने मार्ग बंद कर सुरक्षा व्यवस्था संभाली, जबकि ऊर्जा निगम ने मरम्मत के बाद बिजली आपूर्ति और यातायात बहाल कराया। सोमवार की सुबह गैस प्लांट चौकी के पास विद्युत तारों में फॉल्ट होने लगा। इसके बाद एक विद्युत तार टूट कर सड़क पर आ गिरी। मौके पर पहुंची पुलिस ने ऊर्जा निगम के अधिकारियों को विद्युत तार टूटने की सूचना दी। इसके बाद ऊर्जा निगम के कर्मचारी मरम्मत काम करने पहुंचे। मरम्मत काम के लिए क्षेत्र की बिजली सप्लाई को बंद कर दिया गया। करीब दो घंटे में विद्युत तार की मरम्मत का काम पूरा हो सका। मरम्मत काम पूरा होने के बाद मार्ग पर दोबारा वाहनों की आवाजाही शुरू हो सकी। करीब दो घंटे तक पुलिस ने रूट डाइवर्ट कर वाहनों का संचालन कराया। ईई रवि कुमार ने बताया कि गर्मी में ओवरलोड बढ़ रहा है। इस वजह से फाल्ट की समस्या बन रही है। मौके पर कर्मचारियों ने मरम्मत काम करके बिजली आपूर्ति सुचारु करी।

ज्वालापुर में ईई कार्यालय का आक्रोशित भीड़ ने घेराव किया

हरिद्वार। ज्वालापुर के कई क्षेत्रों में घंटों बिजली आपूर्ति बाधित रहने से नाराज लोगों ने देर रात ऊर्जा निगम के अधिशासी अभियंता कार्यालय का घेराव कर प्रदर्शन किया। हंगामे के बीच पुलिस को मौके पर बुलाना पड़ा। बाद में अधिकारियों के आश्वासन और फॉल्ट ठीक होने के बाद मामला शांत हुआ। ज्वालापुर के धीरवाली, चाकलान, अहबाब नगर, विष्णुलोक कॉलोनी, टेलीफोन एक्सचेंज और आसपास के क्षेत्रों में शनिवार रात करीब 10 बजे बिजली आपूर्ति बाधित हो गई। रविवार को भी कई इलाकों में देर रात तक बिजली बहाल नहीं होने से लोग गर्मी और उमस में परेशान रहे। इससे आक्रोशित लोगों ने रविवार रात बड़ी संख्या में ऊर्जा निगम के अधिशासी अभियंता कार्यालय पहुंच गए और नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया।

संत समाज के मार्गदर्शन और सहयोग से ऐतिहासिक बनेगा कुंभ-2027 : कैड़ा

कुंभ मेला की तैयारियों को लेकर अखाड़ों के साथ महत्वपूर्ण बैठक आयोजित - अखाड़ों ने तैयारियों की सराहना करते हुए कहा कुंभ मेला के दिव्य एवं भव्य आयोजन हेतु संत समाज देगा पूरा सहयोग

हरिद्वार ,संवाददाता । कुंभ मेला-2027 की तैयारियों को संत समाज की अपेक्षाओं, परंपराओं और आवश्यकताओं के अनुरूप आगे बढ़ाने के उद्देश्य से शहरी विकास मंत्री राम सिंह कैड़ा ने सोमवार को विभिन्न अखाड़ों के संतों एवं प्रतिनिधियों के साथ विस्तृत बैठक की। बैठक में कुंभ से जुड़े स्थायी एवं अस्थायी निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा के साथ-साथ अखाड़ों की आवश्यकताओं और संत समाज के सुझावों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। मेला नियंत्रण भवन के सभागार में आयोजित उक्त बैठक को संबोधित करते हुए कैड़ा ने कहा कि कुंभ सनातन संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा का सबसे विराट आयोजन है। इसकी गरिमा केवल भव्य व्यवस्थाओं से नहीं, बल्कि संत समाज के विश्वास, सहयोग और मार्गदर्शन से और अधिक प्रतिष्ठित होती है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार अगले वर्ष आयोजित होने वाले कुंभ को दिव्य, भव्य, सुरक्षित और सुव्यवस्थित बनाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।उन्होंने कहा कि अखाड़े और कुंभ एक-दूसरे के पर्याय हैं। अखाड़ों और संत समाज के बिना कुंभ की परिकल्पना अधूरी है। इसलिए कुंभ की समस्त व्यवस्थाओं में संतों की भावनाओं, परंपराओं और आवश्यकताओं का पूरा सम्मान सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कुंभ को लेकर संत समाज के सुझाव और मार्गदर्शन सरकार के लिए अमूल्य हैं तथा इन्हीं के अनुरूप सभी व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया जाएगा। अखाड़ों एवं संतों के लिए आवश्यक सुविधाएं समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराई जाएंगी तथा पूरे आयोजन के दौरान उनसे निरंतर संवाद बनाए रखा जाएगा।

शहरी विकास मंत्री ने कहा कि संत समाज भारतीय संस्कृति और सामाजिक जीवन का पथप्रदर्शक है। इसलिए उनके अनुभव और सुझाव कुंभ के सफल आयोजन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने संतों से आग्रह किया कि वे आगे भी इसी प्रकार मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करते रहें, ताकि कुंभ-2027 श्रद्धालुओं के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बन सके।उन्होंने बताया कि मेला क्षेत्र में सड़क, पेयजल, स्वच्छता, सीवर, प्रकाश व्यवस्था, पार्किंग, शिविर क्षेत्रों के विकास सहित सभी आधारभूत सुविधाओं पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। सभी निर्माण कार्य गुणवत्ता एवं निर्धारित समयसीमा के अनुरूप पूर्ण किए जाएंगे, ताकि कुंभ प्रारंभ होने से पूर्व प्रत्येक व्यवस्था पूरी तरह तैयार रहे।

बैठक के दौरान महंत रविन्द्र पुरी (महा निर्वाणी अखाड़ा), महंत राघवेन्द्र दास एवं महंत प्रेमदास (बड़ा उदासीन अखाड़ा), महंत भगत राम एवं महंत जगतार मुनि (नया उदासीन अखाड़ा), संत देवेन्द्र सिंह एवं संत जसविन्दर सिंह (निर्मल अखाड़ा), महंत राजेन्द्र दास एवं महंत राम दास (निर्मोही अखाड़ा), महंत मुरली दास एवं स्वामी संजय दास (निवाणी अणि अखाड़ा), महंत सत्यम गिरी एवं महंत मंसा पुरी (अटल अखाड़ा), महंत वैष्णव दास एवं महंत माधव दास (पंच दिगंबर अखाड़ा), तथा स्वामी महादेवानंद, स्वामी हरिहरानंद एवं स्वामी गोविन्दानंद (अग्नि अखाड़ा) सहित अन्य संत-महात्माओं ने कुंभ मेले की व्यवस्थाओं को लेकर महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने अखाड़ों की व्यवस्थाओं, श्रद्धालुओं के सुगम आवागमन, पारंपरिक व्यवस्थाओं के संरक्षण तथा मेला क्षेत्र में उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के संबंध में अपने विचार साझा किए।

संतों ने कुंभ मेला-2027 के दिव्य, भव्य, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित आयोजन के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर की जा रही तैयारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सरकार कुंभ की व्यवस्थाओं को लेकर संत समाज की भावनाओं और परंपराओं का सम्मान करते हुए, निरंतर संवाद स्थापित कर रही है, जो स्वागतयोग्य है। संतों ने विश्वास व्यक्त किया कि सरकार और संत समाज के समन्वित प्रयासों से आगामी कुंभ मेला ऐतिहासिक, गरिमामय और श्रद्धालुओं के लिए अविस्मरणीय बनेगा। उन्होंने कहा कि सभी अखाड़ों से जुड़े संत-महात्मा कुंभ मेला-2027 को दिव्य एवं भव्य बनाने के लिए हरसंभव सहयोग प्रदान करेंगे तथा समय-समय पर अपने सुझाव और मार्गदर्शन भी देते रहेंगे, ताकि आयोजन सनातन परंपराओं के अनुरूप सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

बैठक में मेला अधिकारी श्रीमती सोनिका ने कुंभ मेला-2027 की तैयारियों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि स्थायी एवं अस्थायी दोनों प्रकार के कार्य निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अखाड़ों एवं संत समाज के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं उनकी परंपराओं और आवश्यकताओं के अनुरूप सुनिश्चित की जाएंगी।उन्होंने अखाड़ों के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि आगामी कुंभ में भाग लेने वाले महामंडलेश्वरों एवं अन्य संतों से संबंधित आवश्यक सूचनाएं समय से मेला प्रशासन को उपलब्ध करा दें, ताकि शिविरों के आवंटन एवं अन्य व्यवस्थाएं समयबद्ध ढंग से सुनिश्चित की जा सकें। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि अखाड़े अपने सुझाव लिखित रूप में उपलब्ध कराएं, जिससे उन्हें तैयारियों में समुचित रूप से सम्मिलित किया जा सके। बैठक में जिलाधिकारी हरिद्वार मयूर दीक्षित, आईजी कुंभ योगेंद्र सिंह रावत, एसएसपी कुंभ आयुष अग्रवाल, नगर आयुक्त नंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक (यातायात) सुश्री निशा यादव, अपर मेला अधिकारी दयानंद सरस्वती, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) जितेंद्र कुमार, सचिव हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण प्रत्यूष सिंह, उप मेला अधिकारी आकाश जोशी एवं मनजीत सिंह तथा भाजपा जिला अध्यक्ष आशुतोष शर्मा सहित मेला व्यवस्था से जुड़े विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

बहादराबाद में तीन दिवसीय जिला स्तरीय आयुर्वेद चिकित्सा शिविर शुरू

हरिद्वार । बहादराबाद स्थित आयुर्वेद उत्कर्ष केंद्र, बहादराबाद में सोमवार से तीन दिवसीय जिला स्तरीय आयुर्वेद चिकित्सा शिविर का शुभारंभ हुआ। शिविर का उद्घाटन जिला आयुर्वेद एवं यूनानी अधिकारी डॉ. स्वास्तिक सुरेश ने किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार पद्धति नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवनशैली का आधार है और लोगों से आयुर्वेद अपनाकर निरोग रहने का आह्वान किया। शिविर में डॉ. विशाल प्रभाकर, डॉ. सोरमी, डॉ. विजेन्द्र कुशवाह, डॉ. विकास दुबे एवं डॉ. संजय कुमार ने रोगियों का परीक्षण कर परामर्श और उपचार दिया। पंचकर्म, अग्निकर्म, जलौकावचारण तथा क्षारसूत्र चिकित्सा के साथ संतुलित आहार-विहार और स्वस्थ जीवनशैली की जानकारी भी दी गई।

श्री ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के इंदौर शहर से 80 किमी. दूर है। यह नर्मदा नदी के किनारे बसी एक ऊंची पहाड़ी पर मौजूद है। यहां शिव का ज्योतिर्लिंग ॐ के आकार वाली पहाड़ी पर मौजूद है। इसी वजह से इनको ओंकारेश्वर कहा जाता है। शिव पुराण में इसको परमेश्वर लिंग भी कहा गया है। यहां भगवान महादेव ज्योति स्वरूप में विराजमान हैंं

सावन का महीना चल रहा है इस दौरान भक्त बड़ी संख्या में भगवान शिव के दर्शन के लिए मंदिर पहुंच रहे हैं। सावन में शिव की पूजा का काफी महत्त्व है। सावन का महीना भगवान शिव की पूजा

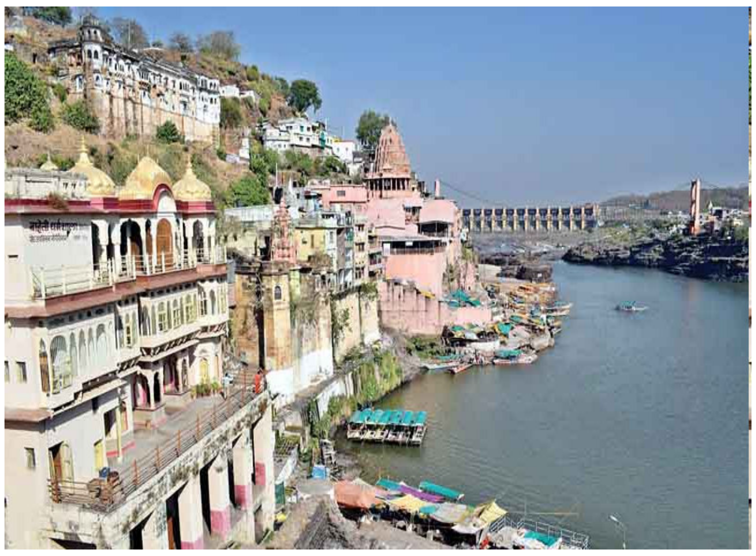

के लिए खास माना जाता है। सावन में बड़ी संख्या में भक्त शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। इन्हीं ज्योतिर्लिंगों में भगवान भोलेनाथ का चौथा ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर भी शामिल है। मान्यता है कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से ही मनुष्य की सभी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के इंदौर शहर से 80 किमी. दूर है। यह नर्मदा नदी के किनारे बसी एक ऊंची पहाड़ी पर मौजूद है। यहां शिव का ज्योतिर्लिंग ॐ के आकार वाली पहाड़ी पर मौजूद है। इसी वजह से इनको ओंकारेश्वर कहा जाता है। शिव पुराण में इसको परमेश्वर लिंग भी कहा गया है। यहां भगवान महादेव ज्योति स्वरूप में विराजमान हैं। क्यों खास है ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग जानें।

क्या है ओंकारेश्वर मंदिर का रहस्य- धार्मिक मान्यता के मुताबिक भगवान शिव माता पार्वती के साथ ओंकारेश्वर में रात में सोने के लिए आते हैं। मान्यता यह भी है कि रात के समय शिव आदिशक्ति माता पार्वती के साथ हर रोज यहां चौपड़ खेलते हैं। इसीलिए शाम की आरती के बाद यहां चौपड़ बिछाकर मंदिर के गर्भगृह को बंद कर दिया जाता है। अगले दिन सुबह जब गर्भगृह खोला जाता है, तो यह चौपड़ बिखरा हुआ मिलता है। कहा जाता है कि जो भी भक्त शिव के ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लेता है, उसके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं और मनोकामना भी पूर्ण होती है। यही वजह है कि दूर-दूर से लोग दर्शन के लिए यहां पहुंचते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि ओंकारेश्वर मंदिर में दर्शन के बाद नर्मदा या फिर किसी अन्य नदी का जल चढ़ाना जरूरी होता है,तभी दर्शन पूर्ण माने जाते हैं।

क्या है ओंकारेश्वर से जुड़ी धार्मिक कथा- ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग से जुड़ी एक कथा बहुत ही प्रचलित है। कहा जाता है कि राजा मांधाता ने एक समय में महादेव को प्रसन्न करने के लिए कड़ी तपस्या की थी। जब उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर महादेव ने उनको दर्शन दिए तो दो वर मांगने के लिए कहा। पहले वर में राजा मांधाता ने शिव से कहा कि वह इसी जगह पर विराजमान हो जाएं साथ ही उन्होंने शिव के नाम से अपना नाम जोडने का भी वर महादेव से मांगा। तब से ही भगवान शिव इस जगह पर विराजमान हैं। इस जगह को ओंकार मांधाता के नाम से भी जाना जाता है।

सहनशीलता और चुनौतियों से निपटने का नाम- श्रीरामकथा

-लीना मेहेंदले

वाल्मीकि रामायण में कही गयी श्रीरामकथा कई अर्थों में अभूतपूर्व है। यह विश्व का आदि काव्य है और आदि इतिहास भी। महर्षि वाल्मीकि के साक्ष्य के अनुसार यह इतिहास त्रेतायुग का है, जिसके पहले सत्ययुग चलता है। अर्थात राम जन्म से भी सहस्रों वर्ष पूर्व भारत में संस्कृति एवं सभ्यता का उदय हो चुका था। समाज ने सुख-संपन्नता देखी थी, ज्ञान-विज्ञान और कलाओं का विस्तार हो रहा था, समाज धारणा के नियम बन चुके थे ; विभिन्न भूक्षेत्रों में विभिन्न राज्य थे, जो कम या अधिक संपन्न थे और अपने-अपने तरीके से प्रजा पालन में लगे हुए थे। परंतु राम जन्म के समय सज्जनों के लिए एक संकट भी उपस्थित हो चुका था और प्रतिदिन बढ़ रहा था। उस संकट का नाम था रावण।

रावण का उदय, विस्तार व प्रभाव राम जन्म के कई वर्ष पूर्व से चला आ रहा था। उसने घोर तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर अपार सामर्थ्य प्राप्त किया था, जिसे वह अब अन्याय के ही कामों में लगा रहा था। पहले उसने अपने ही सौतेले भाई कुबेर को लूटकर दक्षिण दिशा में स्थित लंका में स्वर्ण भवनों से विभूषित अपनी राजधानी बनाई। फिर उसके अनुचर अन्य प्रांतों में अपना वर्चस्व स्थापित करने लगे। वे ऋषि समुदायों को भयभीत करते, यज्ञ में विघ्न डालते और जनमानस को आतंकित कर अपनी धाक जमाते। इस प्रकार हम देखते हैं कि जब राम का जन्म हुआ, तब सामाजिक उत्थान-पतन के चक्र में समाज की अवस्था अधोमुख थी। गुरु वशिष्ठ से शस्त्र-शास्त्र की विद्या ग्रहण कर राम ने जब सोलहवें वर्ष में पदार्पण किया तभी विश्वामित्र मुनि अयोध्या में राजा दशरथ के दरबार में पधारे और उनसे याचना की कि मैं यज्ञ के लिए दीक्षित हूं, अत: स्वयं युद्ध नहीं कर सकता। यह जानकर राक्षस मेरे यज्ञों में विघ्न उत्पन्न कर रहे हैं। इसलिए हे राजन, अपने दो पुत्र राम व लक्ष्मण मुझे सौंप दो, ताकि वे यज्ञ की रक्षा करें और आवश्यक हुआ तो यज्ञ भंग करने वाले राक्षसों का वध भी करें।

इस संवाद से जान पड़ता है कि राम के अतुलनीय शस्त्रज्ञान व शौर्य की चर्चा सब ओर फैल चुकी थी। इस प्रकार शौर्य के प्रतीक राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ यात्रा पर निकले। उनके साथ वनों में समय व्यतीत किया, कई प्रकार के अनुभवों से संपन्न हुए। ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षसों का वध करते हुए मुनियों के यज्ञ को निष्कंटक किया।

स्वाभाविक था कि उनके प्रति विश्वामित्र की शुभाशंसा जागी। वे सीता को राम के लिए योग्य वधू जानकर मिथिला नरेश जनक द्वारा रचित स्वयंवर में राम को ले गये। स्वयंवर का पण था कि सभामंडप में रखे हुए अतिविशाल शिव-धनुष पर जो प्रत्यंचा चढ़ा सके, ऐसे शक्तिमान पुरुष के साथ सीता का ब्याह होगा।

बड़े-बड़े राजा, यहां तक कि स्वयं रावण भी उस धनुष को उठाने में असमर्थ रहा। लेकिन विश्वामित्र की अपेक्षा के अनुरूप ही अतिबलि राम ने धनुष को उठा लिया। इस प्रकार सीता के साथ राम का विवाह संपन्न हुआ।

हर परिस्थिति सहर्ष स्वीकार

सच कहा जाए तो श्रीराम की कथा भारतीय जनमानस को अच्छी तरह अवगत है। इसलिए यहां रामकथा को बताने का उद्देश्य नहीं है। संक्षेप में इतना कहना पर्याप्त है कि विवाह के बाद राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की तैयारी की। परंतु कैकेयी के हठ के कारण राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राज्य देने के लिए वह बाध्य हुए। राम ने इस परिस्थिति को अतिसरलता व प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया और तत्काल ही लक्ष्मण तथा सीता के साथ वनगमन किया। इस प्रकार पितृवचन पूर्ति का बड़ा आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है।

रिश्तों का आदर

भरत का बंधुप्रेम भी भारतीय संस्कृति की एक मिसाल है। भरत ने अपना राज्यपद स्वीकार नहीं किया, बल्कि राम को सौंपने का प्रयास किया। राम लौटने को तैयार नहीं हुए तो भरत उनकी पादुकाएं लेकर अयोध्या वापस आये और राम के नाम से ही राज्य का प्रबंधन करते रहे। साथ ही उन्होंने राम के सम्मुख प्रतिज्ञा भी की थी कि चौदह वर्ष पूरे होते-होते यदि आपने अयोध्या में दर्शन नहीं दिए तो मैं अग्निप्रवेश करूंगा। अत: राम-लक्ष्मण की तरह राम-भरत की भी आदर्श जोड़ी मानी जाती है।

वीरता और दया

वनवास की अपनी यात्रा में राम दक्षिण की तरफ चलते गए। रास्ते में कई ऋषि-मुनियों से भेंट कर उनका आतिथ्य स्वीकार किया। उनसे संपूर्ण देश की परिस्थिति का भान भी हुआ। इसी बीच कई राक्षसों का वध भी किया। फिर पंचवटी में आकर थोड़ा स्थिर हुए। तब तक बारह से अधिक वर्ष व्यतीत हो चुके थे। पंचवटी में ही राम ने खर, दूषण नाम के भयानक क्रूर राक्षसों का वध भी किया। ये दोनों रावण के प्रमुख सेनानी थे। तब मारीच की सहायता से रावण ने सीता का हरण किया और उन्हें आकाशमार्ग से लंका में ले गया। हनुमान जी ने लंकाधिपति के बंदीस्थल में सीता को खोज लिया, तब राम ने वानरों की सहायता से समुद्र पर सेतु बनाया, जो सबको लंका तक पहुंचा सके। लंका में राम ने रावण की विशाल सेना को पराजित कर रावण समेत उसके सभी योद्धाओं का वध किया। फिर अपनी शरण में आये विभीषण को लंका की राजगद्दी पर बैठा कर राम, लक्ष्मण और सीता वापस अयोध्या आये। यहां भी राम ने एक नया आदर्श स्थापित किया। एक प्रबल शत्रु के सामने राम का न झुकना, उसका नाश करना और फिर भी उसके राज्य की कोई भी लूट न करते हुए वापस अयोध्या लौट आना, यह आदर्श भी भारतीय संस्कृति का परिचायक है।

रामकथा सहनशीलता की, तितिक्षा की, प्रतीक्षा की और अत्याचार पर विजय की कथा है। यह हमारी विरासत ही नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व की परिचायक है। ऐसी स्मृतियों की उपासना हमें निरंतर ऊर्जावान बनाती है और हमारे ज्ञानमार्ग को प्रशस्त करती है। इस परंपरा में राम हमारे उपास्य भी बन जाते हैं। संतों की वर्णित अनुभूतियों को मानें तो उपास्य के साथ उपासक का संवाद निरंतर चलता रहता है। इसी प्रक्रिया से हम ऋषियों की तपस्या और वर प्राप्ति की घटना को समझते हैं। इसी से हम तुलसी द्वारा राम का दर्शन पाना या रामकृष्ण परमहंस द्वारा काली माता से संवाद आदि बातें समझते हैं। इसी कारण राम की उपासना भी लाखों लोग करते आ रहे हैं।

हम पाते हैं कि भारतीय संस्कृति में सदा ही सद्गुणों का आदर और दुष्टता का तिरस्कार किया गया है। यही कारण है कि हजारों वर्षों बाद भी राम हमारे लिए आदर्श हैं। महाभारत के वर्णनानुसार वन में भटकते हुए पांडव जब अपने दुर्भाग्य के कारण निराश हो रहे थे, तब गुरु ने उन्हें राम का इतिहास सुनाकर ढाढस बंधाया।

ऐसी यह रामकथा हमारे जनमानस में कहां-कहां थी या कहें कि कहां-कहां नहीं थी। उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक। सुदूर पूर्व अर्थात इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया तक देश राम से अपना संबंध बताते हैं। योगवासिष्ठ के एक वर्णन के अनुसार अफगानिस्तान में (तब का गांधार) भी राम ने भ्रमण किया है। संथाल परगना, बस्तर और पूरे दक्षिण भारत के वनवासी इलाके रामकथाओं से भरे पड़े हैं। समाजशास्त्र का एक नियम बताया जाता है कि जब किसी सभ्यता में कोई अत्यंत प्रभाव डालने वाली घटना घटती है, तो वह उस समाज की सामूहिक स्मृति का अध्याय बन जाती है।

मानवीय त्रासदी की आखिर चिंता किसे

बड़े पर्यटन स्थल के रूप में उभरने की भारत की महत्त्वाकांक्षा पहले ही चोटिल हो चुकी है। अब ये धारणा बनी कि यहां सुरक्षित स्थितियां नहीं हैं, तो मेडिकल टूरिज्म भी प्रभावित हो सकता है। दिल्ली के मालवीय नगर इलाके में हुए अग्निकांड ने राष्ट्रीय राजधानी में आम प्रशासन के ध्वस्त हो चुके सिस्टम की पोल खोली है। इस दर्दनाक घटना में 21 लोगों की जान गई, जिनमें दर्जन भर विदेशी हैं। दिल्ली में बेड एंड ब्रेकफास्ट (बीएंडबी) स्कीम के तहत आवासीय इलाकों में मकानों को होटल की तरह चलाने की छूट मिली हुई है। मगर, इसके लिए नियम और शर्तें तय हैं। बुधवार को हुए हादसे ने बताया कि इन नियम- शर्तों की किस धड़ल्ले से और कितना बेखौफ होकर धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। जिस बीएंडबी होटल में आग लगी, उसे छह कमरे देने की इजाजत थी, मगर वहां 26 कमरों में आगंतुक रखे जा रहे थे। फायर संबंधी अनापत्ति प्रमाण पत्र लेने की जरूरत उसके मालिक नहीं समझी थी! और अब यह साफ है कि दिल्ली सरकार या एमसीडी के अधिकारियों ने निगरानी या औचक निरीक्षण की या तो जरूरत नहीं समझी, या फिर उनकी मिलीभगत से यह गोरखधंधा चल रहा था। अब मीडिया रिपोर्टों से यह भी साफ है कि उस इलाके में ऐसे अपने होटल चल रहे हैं। और उसी इलाके में क्यों, जब वहां ऐसा हो रहा है, तो अनुमान लगाया जा सकता है कि ऐसा राष्ट्रीय राजधानी के अन्य इलाकों में भी चल रहा होगा! अग्निकांड का शिकार हुआ होटल एक बड़े प्राइवेट अस्पताल के पास है। उस अस्पताल में इलाज कराने आए लोगों के परिजन आस-पास के ऐसे ठिकानों पर ठहरते हैं। भारत- खासकर दिल्ली कथित मेडिकल टूरिज्म का प्रमुख स्थल है, जहां मध्य, पश्चिम एवं दक्षिण एशिया, अफ्रीका और कुछ यूरोपीय देशों के मरीज भी इलाज कराने आते हैं। इस हादसे की खबर उन देशों में कैसा माहौल बनाएगी, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। अभद्रता, महिलाओं से दुर्व्यवहार, गंदगी और बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यटन उद्योग के बड़े स्थल के रूप में उभरने की भारत की महत्त्वाकांक्षा पहले ही चोटिल हो चुकी है। अब ये धारणा बनी कि मरीज या उनके परिजनों के लिए यहां सुरक्षित स्थितियां नहीं हैं, तो मेडिकल टूरिज्म भी प्रभावित हो सकता है। मगर अपने यहां मानवीय त्रासदी और उनके दूरगामी परिणामों की आखिर चिंता किसे है!

अंगदान मानव सेवा का सर्वोच्च कार्य :केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी.नड्डा

हरिद्वार (संवाददाता)। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज हरिद्वार में दधीचि अंगदान संकल्प अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जे.पी. नड्डा की उपस्थिति में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर देशभर से आए विशेषज्ञों, चिकित्सकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं साधकों ने अंगदान के महत्व पर विचार रखे तथा अनेक लोगों ने मानव सेवा के लिए अंगदान का संकल्प लिया। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जे.पी. नड्डा ने कहा कि अंगदान मानव सेवा का सर्वोच्च कार्य है, जिसके माध्यम से गंभीर रूप से जरूरतमंद लोगों को नया जीवन प्रदान किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अंगदान को वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से समझने की आवश्यकता है। भारत सरकार स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ, प्रभावी और जन-केंद्रित बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य क्षेत्र में व्यापक सुधार हुए हैं। अंगदान एवं प्रत्यारोपण व्यवस्था को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संस्थागत ढांचे को विकसित किया गया है और राज्यों में भी अंगदान से जुड़े संगठनों को सक्रिय किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ने से देश में अंगदान की संख्या में वृद्धि हुई है और जनभागीदारी से इसे एक व्यापक जनआंदोलन बनाया जा सकता है। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि भारत की सनातन संस्कृति त्याग, समर्पण, सेवा और परमार्थ की महान परंपरा पर आधारित रही है। महर्षि दधीचि के त्याग का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने मानवता और धर्म की रक्षा के लिए अपनी अस्थियों तक का दान कर दिया था। इसी प्रकार राजा शिवि द्वारा एक पक्षी की रक्षा के लिए अपने शरीर का अंश अर्पित करने की कथा भारतीय संस्कृति में करुणा और परोपकार की भावना को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि मृत्यु के बाद भी यदि शरीर का कोई अंग किसी जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन दे सकता है, तो इससे बड़ा मानव कल्याण का कार्य कोई नहीं हो सकता। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, चिकित्सा ढांचे के विकास और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के माध्यम से अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए ऐतिहासिक कार्य किए जा रहे हैं। उत्तराखंड में भी स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में अंगदान और प्रत्यारोपण व्यवस्था को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। इसके लिए सरकारी एवं निजी अस्पतालों, प्रशासन, पुलिस, परिवहन विभाग तथा संबंधित संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया जाएगा। दून मेडिकल कॉलेज में राज्य के प्रथम सरकारी ऊतक प्रत्यारोपण केंद्र के निर्माण सहित अंग प्रत्यारोपण केंद्रों, अंग बैंक और जिला स्तरीय अंगदान केंद्रों के नेटवर्क को विकसित किया जा रहा है, ताकि जरूरतमंदों को समय पर अंग उपलब्ध हो सकें। मुख्यमंत्री ने गायत्री परिवार द्वारा एक शताब्दी से आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

हरिद्वार में बड़ा सियासी और आध्यात्मिक जमावड़ा, शांतिकुंज पहुंचे जेपी नड्डा और सीएम धामी

- शांतिकुंज में शैलदीदी से मिले केंद्रीय मंत्री नड्डा और मुख्यमंत्री धामी, राष्ट्र निर्माण पर हुआ मंथन
- उत्तराखंड दौरे पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री, मुख्यमंत्री संग शांतिकुंज पहुंचकर लिया शैलदीदी का आशीर्वाद
- जेपी नड्डा और पुष्कर सिंह धामी ने शांतिकुंज में टेका माथा, शैलदीदी को अंगवस्त्र भेंट कर की चर्चा

हरिद्वार । केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को शांतिकुंज पहुंचकर गायत्री परिवार की प्रमुख अधिष्ठात्री शैलदीदी से विशेष मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं ने शैलदीदी को आदरपूर्वक अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया और देश की प्रगति के लिए उनका आशीर्वाद लिया। शांतिकुंज के इस विशेष दौरे से ठीक पहले केंद्रीय मंत्री नड्डा और मुख्यमंत्री धामी ने हरिद्वार में आयोजित 'दधीचि अंगदान महादान संकल्प अभियान' में मुख्य रूप से हिस्सा लिया था। स्वास्थ्य मंत्रालय के इस बड़े अभियान के मंच से दोनों दिग्गजों ने देश में अंगदान को जन-आंदोलन बनाने की वकालत की, जहां स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि देश में अब तक आधार कार्ड से जुड़े 5 लाख से अधिक प्रमाणित अंगदान संकल्प पंजीकृत हो चुके हैं। इस आध्यात्मिक बैठक के दौरान नेताओं ने शैलदीदी के साथ सामाजिक सरोकारों, जन-कल्याण और राष्ट्र निर्माण से जुड़े कई गंभीर विषयों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया। गायत्री परिवार के वरिष्ठ पदाधिकारियों की मौजूदगी में हुई इस चर्चा को देशहित में बेहद सकारात्मक माना जा रहा है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या भी मुख्य रूप से मौजूद रहे। उनके अलावा उत्तराखंड सरकार के कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक और भाजपा के जिला अध्यक्ष आशुतोष शर्मा ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। शांतिकुंज परिवार के कई अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों और शहर के गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में यह मुलाकात संपन्न हुई।

स्मार्ट मीटर के विरोध में कांग्रेस का बिजली घर घेराव

हरिद्वार । उपभोक्ताओं की सहमति के बिना स्मार्ट मीटर लगाने के विरोध में मंगलवार को जिला महानगर कांग्रेस कमेटी ने वरिष्ठ नेताओं, ब्लॉक पदाधिकारियों और पार्षदों के साथ बिजलीघर का घेराव कर प्रदर्शन किया। इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सरकार और बिजली विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया पर तत्काल रोक लगाने की मांग की। इतना ही नहीं ऊर्जा निगम के अधिकारी के कार्यालय पर न मिलने से कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने अधिकारी की कुर्सी पर लापता का पोस्टर भी चस्पा कर दिया। जिला महानगर कांग्रेस अध्यक्ष अमन गर्ग और स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष मुरली मनोहर ने कहा कि शहर की जनता बिजली कटौती, बढ़ते बिलों और अव्यवस्थाओं से परेशान है, जबकि बिजली विभाग के कार्यालयों में अधिकारियों की अनुपस्थिति के बावजूद लाइट, पंखे और एसी चलते मिले। उन्होंने इसे सरकारी संसाधनों की बर्बादी बताते हुए विभाग की कार्यशैली पर सवाल उठाए। यूथ कांग्रेस प्रदेश महासचिव उत्कर्ष वालिया और पार्षद विवेक भूषण विक्की ने कहा कि स्मार्ट मीटर के नाम पर आम जनता पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालने की तैयारी की जा रही है। उपभोक्ताओं की सहमति के बिना मीटर बदलना उनके अधिकारों का उल्लंघन है और कांग्रेस इसका विरोध करती रहेगी। महानगर कांग्रेस महासचिव राजीव भार्गव और ब्लॉक अध्यक्ष अजय गिरी ने आरोप लगाया कि सरकार की नीतियां निजी कंपनियों को लाभ पहुंचाने वाली हैं। उन्होंने कहा कि जनता की जेब पर अतिरिक्त बोझ डालने का हर प्रयास लोकतांत्रिक तरीके से विफल किया जाएगा।

रोड़ी बेलवाला क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने के दौरान हंगामा

हरिद्वार । बुधवार देर रात नगर निगम द्वारा रोड़ी बेलवाला क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान स्थानीय लोगों ने विरोध करते हुए हंगामा किया। हालांकि विरोध के बावजूद प्रशासनिक टीम ने अभियान को नहीं रोका और अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जारी रखी। स्थानीय लोगों का आरोप है कि नगर निगम की टीम बिना किसी पूर्व सूचना के जेसीबी लेकर मौके पर पहुंची, जबकि अतिक्रमण हटाने से पहले नोटिस दिया जाना चाहिए था। इसी बात को लेकर मौके पर तनाव की स्थिति बन गई और कुछ समय के लिए माहौल गरमाया रहा। ज्ञात हो कि आगामी कुंभ और कांवड़ यात्रा को देखते हुए प्रशासन द्वारा पूरे नगर निगम क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत सड़कों, घाटों और सार्वजनिक स्थानों से अवैध निर्माण और अस्थायी अतिक्रमण हटाए जा रहे हैं। इस संबंध में सिटी मजिस्ट्रेट हरगिरि ने स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो भी व्यक्ति अतिक्रमण नहीं हटाएगा, उसके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

हरकी पैड़ी क्षेत्र से गुम हुआ 4 वर्षीय बच्चा सकुशल बरामद

हरिद्वार । निर्जला एकादशी के अवसर पर हरकी पैड़ी क्षेत्र में उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक 4 वर्षीय बच्चा अपने माता-पिता से बिछड़ गया। गुम हुए बच्चे की पहचान मनकीरत सिंह, पुत्र बंटी सिंह, निवासी शाहदरा नगर, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) के रूप में हुई। घटना की सूचना मिलते ही आपदा राहत दल 40 पीएसी की टीम ने तत्काल खोज अभियान शुरू किया। लगातार सर्च ऑपरेशन के बाद टीम ने बच्चे को विष्णु घाट, हरकी पैड़ी क्षेत्र से सकुशल बरामद कर लिया। इसके बाद बच्चे को सुरक्षित रूप से उसके माता-पिता के सुपुर्द किया गया। बच्चे के मिलने पर परिजनों ने राहत की सांस ली और उत्तराखंड पुलिस एवं आपदा राहत दल का आभार व्यक्त किया। इस रेस्क्यू ऑपरेशन में उपनिरीक्षक इखलाक मलिक सहित टीम आपदा राहत 40 पीएसी की अहम भूमिका रही।

वैश्य बंधु समाज ने राहगीरों को पिलाया ठंडा शरबत

हरिद्वार । निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर श्री वैश्य बंधु समाज मध्य क्षेत्र हरिद्वार द्वारा पुराना रानीपुर मोड़ पर छबील लगाकर राहगीरों और श्रद्धालुओं को ठंडा शरबत वितरित किया गया। भीषण गर्मी में शीतल पेय पाकर लोगों ने राहत की सांस ली। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने कहा कि मानव सेवा ही सच्ची सेवा है। सनातन संस्कृति में प्यासे व्यक्ति को जल या शीतल पेय उपलब्ध कराना सबसे बड़ा पुण्य कार्य माना गया है।

वेलकम टू द जंगल का ट्रेलर जारी, भारत की पहली 2000 करोड़ी फेक फिल्म में होगा फुल धमाल

वेलकम टू द जंगल का ट्रेलर वाईआरएफ स्टूडियो में एक बड़े इवेंट में लॉन्च किया गया. यह फिल्म वेलकम फ्रैंचाइजी की तीसरी किस्त है. यह अपनी बड़ी स्टार कास्ट की वजह से पहले ही चर्चा में है. अब, ट्रेलर के बारे में नई जानकारी ने अक्षय कुमार की इस कॉमेडी फिल्म को लेकर उत्साह और बढ़ा दिया है. अक्षय कुमार ने सोशल मीडिया पर वेलकम टू द जंगल का ट्रेलर अपलोड किया और कैप्शन में लिखा, टेंशन दूर, जंगल का पागलपन शुरू. आपकी सारी चिंताएं दूर करने के लिए आ गया है जबरदस्त स्ट्रेस-बस्टर वेलकम टू द जंगल का ट्रेलर. वेलकम टू द जंगल - सिनेमाघरों में हंगामा शुरू होगा 26 जून से. वेलकम टू द जंगल का ट्रेलर 4 मिनट 10 सेकंड का है, जिसमें कॉमेडी, अफरातफरी और कन्फ्यूजन का एक जबरदस्त मिक्स देखने को मिला है. इसकी शुरुआत इंडिया की फर्स्ट 2000 करोड़ी फेक फिल्म से होती है. इसके बाद फिल्म की पूरी कास्ट के अनोखे इंट्रोडक्शन सॉन्ग से होती है. इसके बाद परेश रावल अक्षय कुमार के किरदार से परिचय कराते हैं. अक्षय पहले टॉप के हीरो होते है, लेकिन बाद में वह फ्लॉप के हीरो बन जाते हैं.

ट्रेलर में पता चलता है कि वेलकम के मशहूर किरदार उदय और मजनू के भाई भी है, जिसका किरदार सुनील शेट्टी और अरशद वारसी निभाते हैं. एक फिल्म बनाने के लिए अक्षय कुमार और सारी टीम एक छत के नीचे आते हैं.इसमें वेलकम फिल्म के मशहूर मजनू भाई वाले सीन की झलक भी दिखाई गई है, जिसे अनिल कपूर ने निभाया था और जो फैंस का पसंदीदा पल था- वो था- मजनू भाई की पेटिंग.

इसके बाद परेश वाले बताते हैं कि वे एक फिल्म बना रहे हैं, जो आर्मी पर आधारित है. इसके लिए सभी ट्रेनिंग दी जाती है. इस बीच लारा दत्ता चाबुक चलाती दिखती हैं. ट्रेलर में एक गांव दिखाया जाता है, जहां के लोग गांव को आजाद कराने के लिए आर्मी का इंतजार करते हैं. फिल्म की शूटिंग उनके गांव में होता है. गांव वालों को लगता है कि असली आर्मी उनके गांव को आजाद कराने आई है.

इसके बाद जैकी श्रॉफ की एंट्री होती है, जो विलेन का किरदार निभाते हैं. वह अपने डाकूओं के साथ गांव में घुसते हैं और गोलीबारी करते हैं. इस दौरान अक्षय कुमार और उनकी पूरी स्टार कास्ट को उनके सामने गिड़गिड़ाते हुए नजर आता है.

अक्षय कुमार इस ट्रेलर के अहम हिस्सा है. लंबे समय बाद अक्षय कुमार, परेश रावल और सुनील शेट्टी का एक साथ आना भी ट्रेलर की सबसे चर्चित बातों में से एक है. तीनों एक्टर्स अपनी पुरानी वाली केमिस्ट्री को फिर से दिखा रहे हैं, जिससे हेरा फेरी में उनकी मशहूर तिकड़ी की यादें ताजा हो गई है.

इस फिल्म में कई बड़े कलाकार हैं. अक्षय कुमार के साथ सुनील शेट्टी, परेश रावल, अरशद वारसी, रवीना टंडन, दिशा पटानी, जैकलीन फर्नांडीस, लारा दत्ता, जैकी श्रॉफ, जॉनी लीवर, राजपाल यादव, श्रेयस तलपड़े, तुषार कपूर, कृष्णा अभिषेक, कीकू शारदा और दलेर मेहंदी जैसे कई कलाकार शामिल हैं. अहमद खान के डायरेक्शन में बनी यह फिल्म 26 जून, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

अभिनेत्री नियति फातनानी का खुलासा, खतरों के खिलाड़ी के प्रोमो के बाद हुई थी ट्रोलिंग

अभिनेत्री नियति फातनानी ने कहा है कि रियलिटी शो के दौर में कई बार मशहूर हस्तियों की बातों को संदर्भ से अलग करके देखा और परखा जाता है। फातनानी ने खतरों के खिलाड़ी के दौरान अपने अनुभव का जिक्र करते हुए बताया कि एक प्रोमो जारी होने के बाद उन्हें काफी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था। हालांकि, पूरा एपिसोड प्रसारित होने के बाद लोगों को वास्तविक स्थिति समझ में आई और उन्होंने उनका समर्थन किया। फातनानी ने अपने अनुभव का उदाहरण देते हुए कहा, खतरों के खिलाड़ी के दौरान जब एक प्रोमो रिलीज हुआ था, तब मुझे प्रशंसकों की ओर से काफी आलोचना झेलनी पड़ी। हालांकि, जो लोग मुझे जानते थे, उन्हें पूरा भरोसा था कि मैं कभी कुछ गलत नहीं करूंगी। एपिसोड प्रसारित होने के बाद सभी को सच्चाई पता चल गई और उन्होंने मेरा समर्थन किया। दरअसल, उस व्यक्ति को शो से बाहर कर दिया गया था। अभिनेत्री ने कहा, प्रशंसक अपने पसंदीदा कलाकारों के प्रति बेहद भावुक होते हैं और यह एक सेलिब्रिटी होने का स्वाभाविक हिस्सा है। सोशल मीडिया के दौर में प्रतिभा और दृश्यता में कौन अधिक महत्वपूर्ण है, इस सवाल पर फातनानी ने कहा कि दोनों पूरी तरह अलग-अलग चीजें हैं। उन्होंने कहा, अगर कोई कलाकार प्रतिभाशाली है और अच्छा प्रदर्शन कर सकता है, तो निर्देशक और निर्माता उसे भूमिका के लिए चुनेंगे। दूसरी ओर, व्यावसायिक नजरिए से यदि किसी परियोजना को दृश्यता से फायदा मिलता है, तो प्रभावशाली सोशल मीडिया हस्तियों को भी कास्ट किया जा सकता है।

धमाल 4 के ट्रेलर लॉन्च के लिए बनाई गई ये योजना, पहली बार दिखेगा ऐसा नजारा

अजय देवगन की बहुप्रतीक्षित फिल्म धमाल 4 के पोस्टर और रिलीज तारीख का खुलासा हो गया है। ताजा जानकारी है कि निर्माता ट्रेलर को एक भव्य कार्यक्रम के तहत लॉन्च करेंगे जिसके लिए बड़ी तैयारी चल रही है। रिपोर्ट के अनुसार, मुंबई के बाहरी इलाके में स्थित पार्क इमैजिका में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार, एक सूत्र ने बताया, धमाल 4 एक खास फिल्म है और इसलिए, निर्माताओं को यह स्पष्ट था कि ट्रेलर लॉन्च का अनुभव भी अनोखा होना चाहिए। इसी के अनुरूप, उन्होंने इमैजिका को आयोजन स्थल के रूप में चुना। और बस इतना ही नहीं। मनोरंजन पार्क में आने वाले मीडियाकर्मियों को एक ऐसा रोमांचक अनुभव मिलेगा जो पारंपरिक ट्रेलर रिलीज से कहीं बढ़कर होगा। कुल मिलाकर ट्रेलर लॉन्च को एक लाइव मनोरंजन अनुभव में बदलने की योजना है। सूत्र ने आगे कहा, कार्यक्रम का सबसे बड़ा आकर्षण 60 फीट लंबा पोस्टर अनावरण होगा। इसमें पूरी स्टारकास्ट की उपस्थिति में पोस्टर एक भव्य झरने से नीचे गिरेगा। उम्मीद है कि यह उपस्थित लोगों के लिए एक खूबसूरत और अविस्मरणीय पल बनेगा। धमाल 4 में अजय, अरशद वारसी, रितेश देशमुख और जावेद जाफरी अपने किरदारों में लौटेंगे। नए किरदारों में रवि किशन, संजीदा शेख, उपेंद्र लिमये, अंजलि आनंद और विजय पाटकर शामिल हैं।

1813 करोड़ कमाने के बाद धुरंधर 2 का ओटीटी पर धमाका, 50 मिलियन व्यूअरशिप के साथ बनाया नया रिकॉर्ड

बॉलीवुड एक्टर रणवीर सिंह की फिल्म धुरंधर: द रिवेंज सिनेमाघरों में तहलका मचाने के बाद हाल ही में ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर रिलीज हुई. ओटीटी पर भी फिल्म को दर्शकों का जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है और ओपनिंग वीकेंड में ही इसने रिकॉर्डतोड़ व्यूअरशिप हासिल कर ली है. इस फिल्म ने 50 मिलियन व्यूअरशिप के साथ ओटीटी पर नया रिकॉर्ड बनाया है. जब फिल्म धुरंधर: द रिवेंज ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर रिलीज हुई तो इसे दर्शकों से मिला-जुला रिस्पॉन्स मिला था. कई सोशल मीडिया यूजर्स ने इस पर नाराजगी भी जाहिर की थी. इसके बावजूद फिल्म की लोकप्रियता पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा. ये फिल्म जियो हॉटस्टार पर तहलका मचा रही है. फिल्म को बड़े पैमाने पर दर्शक मिल रहे हैं. स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के मुताबिक, धुरंधर: द रिवेंज को रिलीज के शुरुआती वीकेंड में ही 50 मिलियन से ज्यादा दर्शकों ने देख लिया है. जियो हॉटस्टार पर फिल्म धुरंधर: द रिवेंज हिंदी के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड में भी अवेलेबल है, जिससे इसे ज्यादा लोग देख पा रहे हैं. खास बात ये है कि फिल्म के कुल वॉच-टाइम का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा कनेक्टेड टीवी डिवाइसेस से आया है, जिससे साफ होता है कि अब दर्शक ओटीटी कंटेंट को भी परिवार के साथ बड़ी स्क्रीन पर देखना ज्यादा पसंद कर रहे हैं. रिपोर्ट के अनुसार, इस पर जियो स्टार के हिंदी और इंग्लिश एंटरटेनमेंट बिज़नेस हेड आलोक जैन ने कहा कि फिल्म को जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला है. उन्होंने बताया कि अब दर्शक प्रीमियम कंटेंट को घर पर ही बड़ी स्क्रीन पर देखने का अनुभव ज्यादा पसंद कर रहे हैं. साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि फिल्म की कामयाबी इस बात की ओर इशारा करती है कि स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर इमर्सिव और इवेंट जैसे कंटेंट की मांग लगातार बढ़ रही है.

कितने दिन में बदल लेना चाहिए तकिए का कवर की लापरवाही तो इतनी ज्यादा बिगड़ सकती है तबीयत

बिस्तर पर सुकून की नींद के लिए तकिया होना जरूरी होता है. कुछ लोग तो कई तकिए लेकर सोते हैं. तकिए के साथ सोना तब तक गलत नहीं होता है, जब तक कई-कई दिनों तक उसके कवर को बदला न जाए. दरअसल, पिलोकेस अगर सही समय न बदला जाए तो बैक्टीरिया और बीमारियों उसे अपना घर बना सकते हैं. इससे स्किन से जुड़ी कई दिक्कतें हो सकती हैं, इसलिए एक निश्चित समय के बाद तकिए के कवर (क्कद्बद्यद्यश2 ष्टश1द्ग) को जरूर बदल देना चाहिए.

बीमारियों का घर है तकिए का कवर

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, कम से कम हर हफ्ते तकिए का कवर बदलना चाहिए. अगर ऐसा नहीं करते हैं तो स्किन को काफी नुकसान उठाने पड़ सकते हैं. स्किन से जुड़ी बीमारियां फैल सकती हैं. कई बार तो इसका इलाज करवाना भी काम नहीं आता है. दवा बेअसर साबित हो सकती है.

हर हफ्ते न बदले तकिए का कवर तो क्या होगा

हेल्थ एक्सपर्ट्स सलाह देते हैं कि तकिए की खोल यानी कवर हर हफ्ते बदल लेना चाहिए. दरअसल, तकिए के कवर में हर दिन धूल और कण के अलावा तेल, डेड स्किन, हानिकारक बैक्टीरिया, कई तरह की गंदगी और घर में अगर पालतू जानवर हैं तो उनके बाल चिपक जाते हैं. जिसकी वजह से चेहरे पर पिंपल्स, दाग-धब्बे आने लगते हैं. इसलिए समय-समय पर पिलोकेस बदलने रहना चाहिए. वरना चेहरे कि स्किन पूरी तरह तबाह हो सकती है. इतना ही नहीं हर छह महीने में एक बार तकिए को साफ या ड्राई क्लीन या उसे भी बदल देना चाहिए.

अगर हफ्ते में आप अपना पिलो कवर नहीं बदलते तो यह एलर्जी का कारण बन सकता है. कई बार इसकी वजह से इंफेक्शन हो सकता है. हर दिन लोग अलग अलग जगह से आने के बाद बेड पर आते हैं ऐसे में यह अनहाइजीनिक भी हो सकता है. इसके अलावा अगर आप समय समय पर अपनी बेडशीट और पिलो कवर नहीं बदलते तो यह कंफर्ट कम कर देता है. आरामदायक महसूस होने की जगह अनकंफरटेबल फील होने लगता है. पिलो कवर बदलने से आपका तकिया की उम्र भी बढ़ जाती है. इसके अलावा समय समय पर बेडशीट और तकिया का कवर बदलने से पॉजिटिविटी आती है और कमरे की खूबसूरती बढ़ जाती है.

तकिए का कवर कैसे लें

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, अगर तकिए का कवर सिल्क का है तो बैक्टीरिया कम लगते हैं. इससे चेहरे पर पिंपल्स भी नहीं निकलते हैं. स्टडी में पाया गया कि स्किन की सेहत के लिए, तकिए में कॉटन नहीं सिल्क कवर ज्यादा अच्छा होता है. इससे दिक्कते होने का रिस्क कम होता है.

खाने के बिना तो कई दिन रह सकते हैं आप, पर क्या कभी सोचा बिना पानी कितने दिन तक रहा जा सकता है ?

पानी इंसानी शरीर की जरूरत है. एक निश्चित मात्रा में पानी शरीर को सही तरह से काम करने में मदद करता है. इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. खाए बिना तो इंसान कई दिनों तक जिंदा भी रह सकता है लेकिन पानी के बिना ये कठिन है. ऐसे में एक सवाल उठता है कि आखिर एक इंसान बिना पानी के कितनों दिनों तक रह सकता है, पानी की कमी होने से क्या-क्या हो सकता है. आइए जानते हैं विस्तार से...

पानी की कमी से क्या होता है

जब इंसान का शरीर डिहाइड्रेट होता है तो उसे बहुत ज्यादा प्यास लगती है. पानी की कमी से उसे थकान महसूस होती है, ऑर्गन्स तक फेल हो सकते हैं, जिससे मौत हो सकती है. अगर पानी न पिया जाए तो पहले दिन इंसान को थोड़ी सुस्ती लगती है और तीसरे दिन तक कई अंग खराब हो सकते हैं.

पानी की कमी का असर हर इंसान पर अलग-अलग हो सकता है. हालांकि, यह उसकी सहनशीलता के स्तर पर भी निर्भर करता है. चूंकि हमारे शरीर का 70त्न हिस्सा पानी से बना रहता है और इसके जरिए कई जरूरी काम पूरे किए जाते हैं. ऐसे में पानी के बिना ज्यादा दिनों तक सर्वाइव कर पाना आसान नहीं है.

बिना पानी कितने दिनों तक रह सकता है इंसान

आम तौर पर कहा जाता है कि बिना पानी के एक इंसान तीन दिनों तक जीव?त रह सकता है. हालांकि, ये अलग-अलग इंसानों के लिए अलग हो सकता है. यह दो दिन से एक हफ्ते तक हो सकता है. पानी को लेकर रूल ऑफ 3 भी माना जाता है. इसका मतलब इंसान हवा के बिना 3 मिनट, पानी बिना 3 दिन और खाए बिना 3 हफ्ते तक जिंदा रह सकता है.

ऑर्किव फर क्रिमिनोलॉजी की एक स्टडी में पाया गया है कि बिना खाए, बिना पानी इंसान 8 से 21 दिनों से ज्यादा जिंदा नहीं रह सकता है. पानी की कमी से शरीर पर कई नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है. हालांकि, ये सब रहन-सहन और क्लाइमेट पर निर्भर करता है.

शरीर को कितने पानी की जरूरत

1. नेशनल अकेडमिक्स के मुताबिक, दिन में पुरुषों को 3.6 लीटर और महिलाओं को 2.6 लीटर पानी पीना चाहिए. इस मात्रा को लिक्विड और फूड से प्राप्त कर सकते हैं.
2. पानी की जरूरत हर इंसान की उम्र, फिजिकल एक्टिविटी, हेल्थ, फिजिकल कैपिसिटी, हाइट, वेट, लिंग और खानपान पर निर्भर करता है.
3. पानी से भरपूर फल, सब्जी और जूस लेने वालों को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है, जबकि अनाज, ब्रेड या सूखे फूड्स लेने पर पानी की ज्यादा जरूरत होती है.

टमाटर से बनाए जा सकते हैं ये 5 स्वादिष्ट व्यंजन, जानिए रेसिपी

टमाटर एक ऐसी सब्जी है, जो न केवल सलाद में बल्कि कई स्वादिष्ट व्यंजनों में भी इस्तेमाल की जा सकती है। टमाटर में विटामिन-सी, पोटेशियम और एंटी-ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो सेहत के लिए फायदेमंद हैं। आइए आज हम आपको टमाटर से बनाए जाने वाले कुछ ऐसे व्यंजनों की रेसिपी बताते हैं, जो खाने में बेहद स्वादिष्ट और पौष्टिक हैं। इन व्यंजनों को बनाना भी आसान है और ये आपके खाने का मजा बढ़ा सकते हैं।

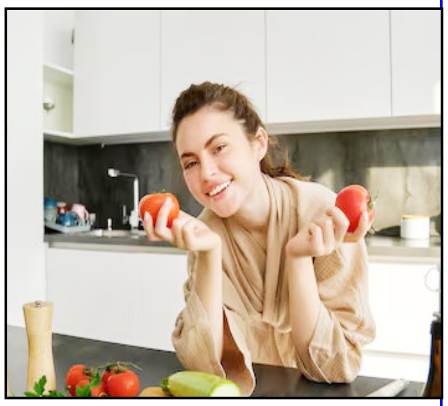

टमाटर का हलवा

टमाटर का हलवा एक खास और स्वादिष्ट मिठाई है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले टमाटर को उबालकर उसका पेस्ट बना लें, फिर घी में सूजी भूनें और उसमें टमाटर का पेस्ट मिलाएं। इसके बाद इसमें चीनी, इलायची पाउडर और सूखे मेवे डालकर पकाएं। यह हलवा न केवल स्वादिष्ट है बल्कि पोषण से भरपूर भी है। इसे आप किसी खास मौके पर बना सकते हैं या किसी भी समय मिठाई के रूप में परोस सकते हैं।

टमाटर का पुलाव

टमाटर का पुलाव एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है जब आप कुछ नया आजमाना चाहते हैं। इसे बनाने के लिए सबसे पहले बासमती चावल को धोकर भिगो दें, फिर तेल या घी में जीरा, तेजपत्ता, दालचीनी डालकर भूनें। अब कटे हुए प्याज डालें और सुनहरा होने तक भूनें, फिर कटे हुए टमाटर डालकर पकाएं जब तक वे नरम हो जाएं। इसके बाद भिगोए हुए चावल डालकर पानी मिलाएं और धीमी आंच पर पकने दें।

टमाटर का रायता

गर्मियों में ठंडा-ठंडा रायता कौन नहीं पसंद करता? टमाटर का रायता बनाने के लिए सबसे पहले दही को अच्छे से फेंट लें, फिर इसमें कदूकस किया हुआ टमाटर, काला नमक, भुना जीरा पाउडर और हरी मिर्च डालकर मिलाएं। इसे ठंडा-ठंडा परोसें। यह रायता खाने में बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक है। इसे आप किसी भी मुख्य भोजन के साथ परोस सकते हैं। यह रायता न केवल आपके खाने को ताजगी देता है बल्कि आपके पेट को भी शांत रखता है।

टमाटर की कढ़ी

पंजाबी कढ़ी तो आपने कई बार खाई होगी, लेकिन क्या आपने कभी टमाटर की कढ़ी चखी है? अगर नहीं तो आज ही आजमाएं। इसके लिए बेसन के घोल में मसाले मिलाकर छोटे-छोटे पकौड़े बना लें, फिर पानी उबालकर उसमें हल्दी, नमक, लाल मिर्च मिलाकर पकाएं। अब इन पकौड़ों को इसमें डालकर पकाएं। दूसरी तरफ टमाटर की ग्रेवी बनाने के लिए टमाटर, प्याज, अदरक-लहसुन का पेस्ट बनाकर मिलाएं। अंत में दोनों को मिलाकर परोसें।

मानसून से पहले साफ कर लें त्वचा की टैनिंग

गर्मी में त्वचा को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से एक है सूरज की हानिकारक किरणों के कारण त्वचा पर होने वाली टैनिंग। यह समस्या खासतौर से उन लोगों के लिए होती है, जो घर से बाहर ज्यादा समय बिताते हैं। ऐसे में जरूरी है कि मानसून का मौसम आने से पहले ही आप इस जिद्दी टैनिंग को साफ कर लें। इसके लिए इन 5 घर पर बने फेस पैक से त्वचा की देखभाल करें।

दही, नींबू और चावल के आटे का फेस पैक

सामग्री: 2 चम्मच दही, एक चम्मच नींबू का रस और एक चम्मच चावल का आटा। बनाने और लगाने का तरीका: सबसे पहले एक कटोरी में चावल का आटा, नींबू का रस और दही मिलाएं। फिर इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाएं और 15 से 20 मिनट के बाद चेहरे को पानी से धो लें। फायदा: यह फेस पैक त्वचा को नमी देने में मदद करता है और त्वचा की रंगत को हल्का करने में भी सहायता कर सकता है।

एलोवेरा जेल, हल्दी और चंदन का फेस पैक

सामग्री: 2 चम्मच एलोवेरा जेल, एक चम्मच चंदन पाउडर और एक चुटकी हल्दी पाउडर। बनाने और लगाने का तरीका: एक कटोरी में एलोवेरा जेल, चंदन पाउडर और हल्दी पाउडर को अच्छे से मिलाएं। अब इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाकर 15-20 मिनट के लिए छोड़ दें, फिर ठंडे पानी से चेहरा धो लें। फायदा: यह फेस पैक त्वचा को मुलायम बनाने के साथ रंगत को हल्का करने में भी मदद कर सकता है, जिससे टैनिंग साफ हो जाती है।

टमाटर, बेसन और दही का फेसपैक

सामग्री: एक टमाटर, 2 चम्मच बेसन और एक चम्मच दही। बनाने और लगाने का तरीका: सबसे पहले टमाटर को पीसकर उसकी प्यूरी बना लें। फिर इस गूदे को बेसन और दही के साथ मिलाकर पैक तैयार कर लें। अब इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाएं और सूखने पर चेहरे को पानी से धो लें। फायदा: यह फेस पैक मृत त्वचा को हटाने और रंगत को हल्का करने में मदद कर सकता है।

संतरे के छिलके, शहद और दूध का फेसपैक

सामग्री: 2 चम्मच संतरे के छिलके का पाउडर, एक चम्मच शहद और एक

चम्पावत को उत्तराखण्ड का मॉडल जनपद बनाना संकल्प: मुख्यमंत्री

123.79 करोड़ की 17 विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास, कॉर्बेट ट्रेल का शुभारंभ'

चम्पावत/देहरादून । 'मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विभिन्न योजनाओं का किया लोकार्पण, सिटी सेन्टर हेतु भूमि पूजन कार्यक्रम में किया प्रतिभाग' मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोमवार को चम्पावत में आयोजित भव्य कार्यक्रम में कुल 123.79 करोड़ की लागत से तैयार एवं प्रस्तावित 17 विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। इनमें 27.79 करोड़ की लागत से पूर्ण हुई 8 योजनाओं का लोकार्पण तथा 96 करोड़ की लागत से 9 नई विकास योजनाओं का शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 349.98 लाख की लागत से निर्मित जिम कॉर्बेट ट्रेल का उद्घाटन किया। इस प्रोजेक्ट के तहत जनपद के विभिन्न स्थानों में जिम कॉर्बेट से संबंधित विभिन्न निर्माण कार्य, सुधारीकरण कार्य किये जा रहे है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री द्वारा बस स्टेशन रोडवेज में निर्मित किये जा रहे सिटी सेन्टर के भूमि पूजन कार्यक्रम में भी प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा विभिन्न मंदिरों के पुजारीगण, अर्धसैनिक बल, युवा वर्ग, जनप्रतिनिधि गण, व्यापार मंडल ढाबा संचालकों, स्वच्छाग्रही, शिक्षकगण, उद्यमियों, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं, टैक्सी यूनियन, बैंक कर्मी तथा बार एसोसिएशन, प्रबुद्धजनों, मीडियाकर्मियों समेत विभिन्न समूहों तथा लोगों से संवाद किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि चम्पावत को उत्तराखण्ड का मॉडल जनपद बनाना उनका संकल्प है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सीमांत क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए निरंतर कार्य कर रही है और चम्पावत आज शिक्षा, पर्यटन, आधारभूत संरचना, महिला सशक्तिकरण, कृषि, व्यापार तथा रोजगार के क्षेत्र में नई पहचान बना रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल भवन और सड़कें बनाना नहीं, बल्कि ऐसा चम्पावत विकसित करना है जहाँ युवाओं को अवसर, महिलाओं को आत्मनिर्भरता, किसानों को समृद्धि, व्यापारियों को नए अवसर तथा प्रत्येक नागरिक को विकास का समान लाभ मिले। उन्होंने कहा कि चम्पावत नगर में लगभग 62.33 करोड़ की लागत से आधुनिक बहुमंजिला पार्किंग एवं शॉपिंग कॉम्प्लेक्स (सिटी सेंटर) का निर्माण किया जाएगा, जिससे पार्किंग की समस्या का समाधान होने के साथ स्थानीय व्यापार को भी नई गति मिलेगी। साथ ही व्यापारिक भवनों के निर्माण, महिला प्रौद्योगिकी पार्क, आधुनिक पुस्तकालय, ज्ञान केन्द्र, ओपन जिम तथा युवाओं के लिए विभिन्न सुविधाओं का भी विकास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की बेटियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए लगभग ६257 करोड़ की लागत से महिला स्पोर्ट्स कॉलेज तथा लगभग 58.52 करोड़ की लागत से आधुनिक साइंस सेंटर की स्थापना की जा रही है। इसके अतिरिक्त कृषि महाविद्यालय, गौशालाओं का विकास तथा आधुनिक कृषि तकनीकों के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में भी कार्य किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ष्विकास भी और विरासत भीष् के मंत्र को आत्मसात करते हुए मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के अंतर्गत माँ पूर्णागिरि धाम, शारदा कॉरिडोर, गोल्ज्यू कॉरिडोर एवं माँ वाराही धाम सहित विभिन्न धार्मिक स्थलों का विकास किया जा रहा है, जिससे धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि टनकपुर में लगभग 237.74 करोड़ की लागत से आधुनिक आईएसबीटी तथा लगभग 14 करोड़ की लागत से मीडिया सेंटर का निर्माण किया जा रहा है। वहीं लोहाघाट में पर्यावरण मित्रों के लिए आवासीय भवन, बनबसा में सैनिक स्मारक एवं पाटी में सैनिक बहुउद्देशीय केन्द्र की स्थापना की दिशा में भी कार्य प्रगति पर हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज लोकार्पित एवं शिलान्यास की गई परियोजनाएँ केवल निर्माण कार्य नहीं, बल्कि विकसित चम्पावत की मजबूत नींव हैं। ये युवाओं के सपनों को नई उड़ान, महिलाओं को नई शक्ति, किसानों को समृद्धि, व्यापार को गति तथा पर्यटन को नई पहचान देने वाली योजनाएँ हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले वर्षों में चम्पावत समावेशी, संतुलित एवं सतत विकास का आदर्श मॉडल बनेगा और विकसित उत्तराखण्ड के संकल्प को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री ने सभी विकास परियोजनाओं के लिए जनपदवासियों को बधाई देते हुए विकास यात्रा में निरंतर जनसहभागिता का आह्वान किया। इस अवसर पर अध्यक्ष जिला पंचायत चम्पावत आनंद सिंह अधिकारी, दर्जा राज्य मंत्री श्याम पांडे, हेमा जोशी, रोहित बिष्ट, मुकेश महराना, भाजपा जिलाध्यक्ष गोविंद सामंत, भाजपा प्रदेश मंत्री निर्मल मेहरा, जिलाधिकारी मनीष कुमार, पुलिस अधीक्षक रेखा यादव, मुख्य विकास अधिकारी डॉ जी.एस.खाती, अपर जिलाधिकारी कृष्णनाथ गोस्वामी सहित समस्त जिला स्तरीय अधिकारीगण, विभिन्न जन प्रतिनिधिगण तथा बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

रामद्रोहियों के घड़ियाली आंसू, रामभक्तों की आस्था सर्वोपरि: भट्ट

सनातनी एकजुटता को देखकर हिंदू आस्था को चोट पहुंचा रहे विपक्षी

देहरादून । भाजपा ने राम मंदिर चढ़ावे से जुड़े प्रकरण में अब तक हुई त्वरित कार्रवाई को न्यायसंगत बताया है। पार्टी का मानना है कि प्रारंभिक दौर से विरोध पर उतरा विपक्ष सनातन की एकजुटता को चोट पहुँचाना चाहता है। प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद श्री महेंद्र भट्ट ने इस मामले पर विपक्ष द्वारा लगाए जा रहे आरोपों को 'घड़ियाली आंसू' करार दिया है। वहीं तीखा पलटवार करते हुए कहा कि रामद्रोही विपक्ष का मकसद केवल हिन्दू आस्था को चोट पहुंचाना है ताकि सनातनी एकजुट न हो सकें। मीडिया द्वारा पूछे सवालों पर उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने हमेशा राम मंदिर निर्माण का विरोध किया, रामभक्तों पर गोलियां चलवाईं और जिनकी चलती तो वे कभी भव्य राम मंदिर बनने ही नहीं देते, आज वह सुचिता की बात कर रहे हैं। विपक्ष तो केवल बाबरी मस्जिद की शान में कसीदे पढ़ने में व्यस्त रहता था। विपक्ष का चरित्र हमेशा से राम विरोधी और राम द्रोही रहा है, इसलिए उनके आरोपों और नजरिए की भाजपा को कोई परवाह नहीं है। हमे और हमारी सरकारों के लिए प्रभु राम के मंदिर की प्रतिष्ठा और रामभक्तों की आस्था एवं विश्वास का महत्व है। उन्होंने कहा कि इस पूरे मामले में कार्रवाई की रफ्तार ही नियत साफ होने का प्रमाण है। उन्होंने विपक्ष के राजनीतिक पाखंड को बेनकाब करते हुए कहा कि सरकार की नीयत पूरी तरह साफ है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सीएम योगी द्वारा निर्धारित अवधि से 3 दिन पहले ही एसआईटी रिपोर्ट सामने आई। 48 घंटे के भीतर त्वरित कार्रवाई करते हुए एफआईआर दर्ज की गई। 24 घंटे के भीतर आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित की गई। इसी क्रम में तत्काल प्रभाव से संबंधित पद से इस्तीफे भी सामने आ गए हैं। जांच की यह गति दर्शाती है कि भाजपा सरकार सनातन धर्म की पवित्रता और जन-आस्था से जुड़े मामलों में किसी भी प्रकार की कोताही बरतने वाली नहीं है। उन्होंने निशाना साधा कि कांग्रेस और विपक्ष के लिए यह केवल राजनीति का सवाल है लेकिन भाजपा के लिए आस्था का प्रश्न है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और समूचे विपक्ष के लिए प्रभु श्री राम और मंदिर केवल राजनीति का मुद्दा रहे हैं। जब पहले उन्हें मंदिर निर्माण के विरोध में राजनीतिक लाभ नजर आया, तो उन्होंने सालों तक मंदिर बनने नहीं दिया। अपनी तुष्टिकरण की राजनीति के कारण वे आज तक रामलला के दर्शन करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए। आज जब मंदिर में चोरी के इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण में उन्हें भ्रम और झूठ फैलाने का फायदा दिख रहा है, तो वे फिर से सक्रिय हो गए हैं। इनका मुख्य मकसद केवल और केवल हिंदू आस्था को चोट पहुंचाना है, ताकि सनातनी समाज राम द्रोहियों के खिलाफ कभी एकजुट न हो सके। उन्होंने कहा कि भाजपा के लिए यह सनातनी आस्था, मान-बिंदुओं और अटूट विश्वास का प्रश्न है। इसी सनातनी विश्वास की रक्षा के लिए हमारी सरकार पूरी निष्पक्षता और कठोरता के साथ जांच प्रक्रिया और कार्रवाई को अंजाम दे रही है। लिहाजा किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

मुख्यमंत्री धामी ने रुड़की में मन की बात कार्यक्रम का 135वें संस्करण को सुना

रुड़की । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को रुड़की में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 135वें संस्करण को सुना। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री का 'मन की बात' कार्यक्रम जनभागीदारी को सशक्त बनाने तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का प्रभावी माध्यम बन गया है। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में देश के विभिन्न भागों में जनसहयोग से हो रहे प्रेरणादायी कार्यों, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन, नवाचार, युवाओं की सहभागिता तथा स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने जैसे विषयों पर अपने विचार साझा करते हुए नागरिकों को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी का संदेश दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के संदेश 'सबका प्रयास' की भावना को और अधिक सशक्त करते हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता से ही विकसित भारत के संकल्प को साकार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड सरकार भी प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में जनकल्याण, सुशासन, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, युवा सशक्तिकरण, स्थानीय उत्पादों के प्रोत्साहन तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस दौरान राज्य सभा सांसद कल्पना सैनी,परिवहन मंत्री प्रदीप बत्रा,अध्यक्ष जिला पंचायत किरण चौधरी,जिलाध्यक्ष भाजपा मधु सिंह, मेयर नगर निगम रुड़की अनीता अग्रवाल,राज्य मंत्री देशराज कर्णवाल, श्यामवीर सैनी,आदेश सैनी,शोभाराम प्रजापति,ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष राकेश गिरी,जिलाधिकारी मयूर दीक्षित, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नवनीत सिंह भुल्लर सहित भाजपा मंडल अध्यक्ष, सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्वामी,मुद्रक व प्रकाशक अवनीश कुमार द्वारा भगवती प्रिंटर्स,इण्डस्ट्रियल एरिया, हरिद्वार से छपवाकर ग्रा. बसवाखेड़ी पो. मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादकः अवनीश कुमार, मो० 9410553400

ई-मेल: liveskgnews@gmail.com

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार न्यायालय में ही होगा)

सभी लेखों में सम्पादक की सहमति जरूरी नही है।